चकमक

नवंबर, 1990 बाल विज्ञान पत्रिका रु. 4.00

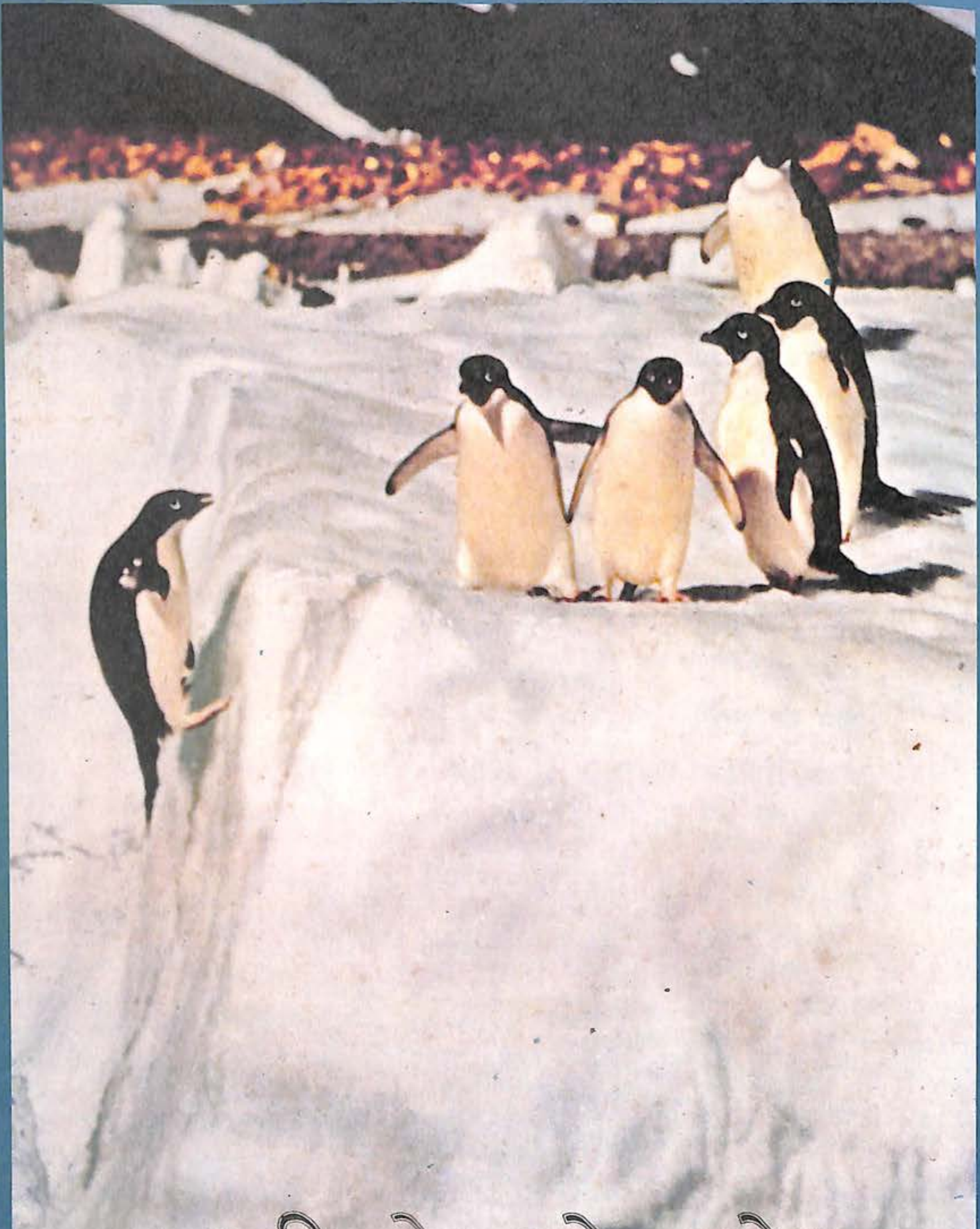

पृथ्वी के दो छोर

समीर, पहली, पारा, गोवा

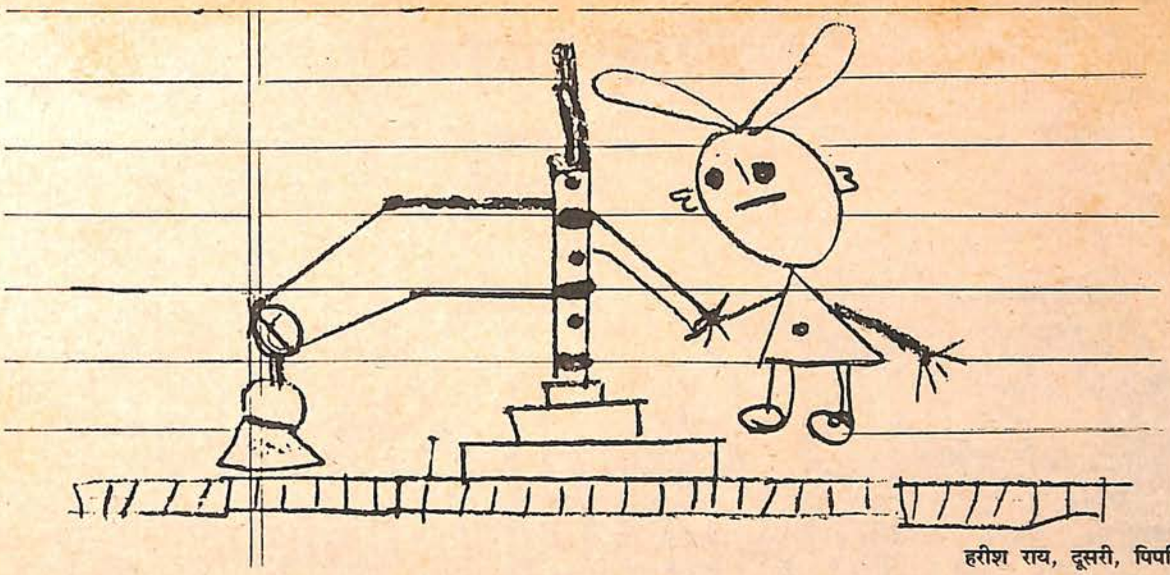

हरीश राय, दूसरी, पिपरिया

चकमक बाल विज्ञान पत्रिका
वर्ष-6 अंक-5 नवंबर, 1990

संपादक
विनोद रायना

सह-संपादक
राजेश उत्साही

कला
जया विवेक

उत्पादन/वितरण
हिमांशु बिस्वास, कमलसिंह

चकमक का चंदा
एक प्रति: चार रुपए
छमाही : बीस रुपए
वार्षिक : चालीस रुपए
डाक खर्च मुफ़्त
चंदा, मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट से एकलव्य के नाम पर भेजें।
कृपया चेक न भेजें।

पत्र/चंदा रचना भेजने का पता
एकलव्य,
ई-1/208, अरेरा कॉलोनी,
भोपाल-462 016 (म.प्र.)
फोन : 61380

कागज़ : 'यूनिसेफ' के सौजन्य से।
सहयोग : राष्ट्रीय विज्ञान व प्रौद्योगिकी संचार परिषद (विज्ञान व प्रौद्योगिकी विभाग, नई दिल्ली)

इस अंक में...

विशेष
- 12 □ पृथ्वी के दो छोर
- 21 □ उत्तर-दक्षिण ध्रुवों के रंग
- 25 □ ध्रुवों की तलाश

कविता
- 6 □ मालू-भालू

कहानी
- 34 □ बिल्लू का बस्ता

हर बार की तरह
- 2 □ मेरा पन्ना
- 10 □ दुनिया पक्षियों की-19
- 11 □ तुम भी बनाओ
- 31 □ कागज़ के खेल
- 32 □ माथा पच्ची
- 39 □ दर्पण के संग खेलो
- 40 □ चित्रकथा : कौन गधा!

धारावाहिक
- 42 □ भूगर्भ की यात्रा - 15

आवरण पर
एक पैंगुइन छलांग लगाकर पानी से बाहर निकलने की कोशिश करता हुआ। पैंगुइन न सिर्फ़ बढ़िया तैराक हैं बल्कि अवसर आने पर सात फुट तक छलांग भी लगा सकते हैं।
फोटो सौजन्य : टाइम लाइफ बुक

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यवसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

रेल यात्रा

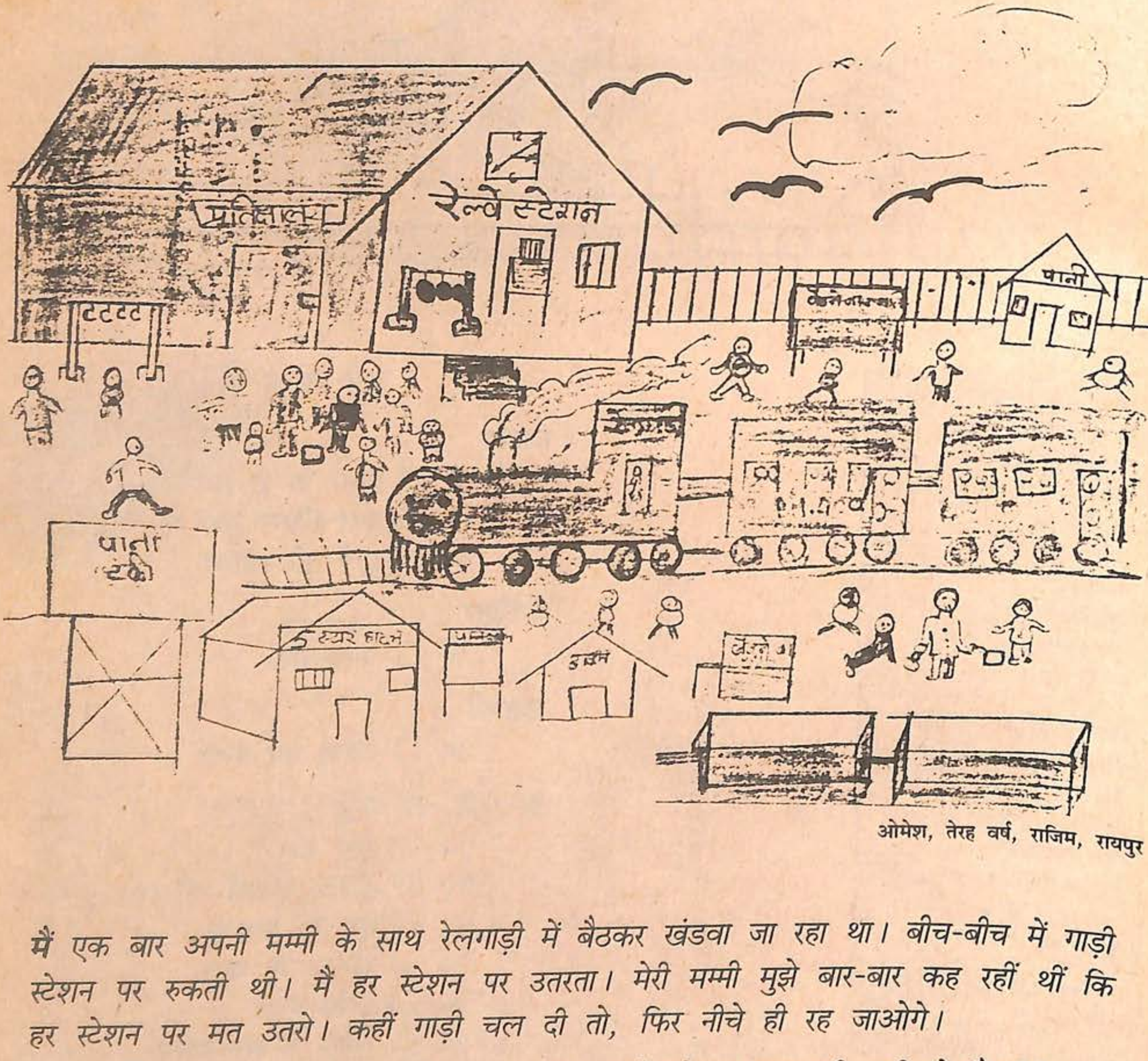

ओमेश, तेरह वर्ष, राजिम, रायपुर

मैं एक बार अपनी मम्मी के साथ रेलगाड़ी में बैठकर खंडवा जा रहा था। बीच-बीच में गाड़ी स्टेशन पर रुकती थी। मैं हर स्टेशन पर उतरता। मेरी मम्मी मुझे बार-बार कह रहीं थीं कि हर स्टेशन पर मत उतरो। कहीं गाड़ी चल दी तो, फिर नीचे ही रह जाओगे।

पर मैंने मम्मी का कहा नहीं माना। जब अगले स्टेशन पर गाड़ी रुकी तो मैं नीचे उतर गया और घूमने लगा। इतने में गाड़ी चल पड़ी, मैं नीचे ही रह गया।

मैं खूब रोया। फिर एक आदमी ने मुझे रोते हुए देखा। उसने मुझ से पूछा, तुम कौन हो? मैंने सब कुछ बता दिया। फिर वह स्टेशन मास्टर के पास ले गया। स्टेशन मास्टर ने मुझसे कहा, 'घबराओ नहीं, अभी टिमरनी के लिए गाड़ी आ रही है, तुम उस गाड़ी से चले जाना!' उन्होंने मुझे एक आदमी के सुपुर्द कर दिया, जो टिमरनी जा रहा था। और मैं घर आ गया।

☐ मणिशंकर स्थापक, बारह वर्ष, टिमरनी

साइकिल की सवारी

कीर्ति चौहान, पांच वर्ष, टिमरनी

एक दिन मैंने साइकिल सवारी की ठानी!
मां को बहुत मनाया, पर मां न मानी!!

मैं चुपके से साइकिल लाया,
गया सड़क पर उसे घुमाया!
साइकिल तेज़ लगा चलाने,
मुझको मज़ा भी लगा आने!

तभी सामने से ट्रक एक आया,
हाथ-पांव का खून सुखाया।
अभी हाल ही जान बची थी,
सामने भारी भीड़ खड़ी थी।

मैंने साइकिल को फुटपाथ पे दे मारा।
भीड़ लगा रही थी मुर्दाबाद का नारा।।

मेरी दो हड्डी टूटी थीं,
शायद खोपड़ी भी फूटी थी!
जब मैं घर की सीढ़ी चढ़ा,
हालत देख मां का गुस्सा बढ़ा!

मां को बड़ी मुश्किल से समझाया,
दो महीने तक साइकिल को न हाथ लगाया!

☐ राहुल नैथानी, नवमीं, दिल्ली

सरकारी स्कूल

हमारे गांव में दो-तीन प्राइवेट स्कूल हैं। दो सरकारी स्कूल भी हैं। जब जुलाई में सरकारी स्कूल खुले, तब वहां पर बहुत कुछ बदल चुका था। नई टेबिल-कुर्सियां आ चुकी थीं। सभी क्लासों में पंखे भी लग चुके थे।

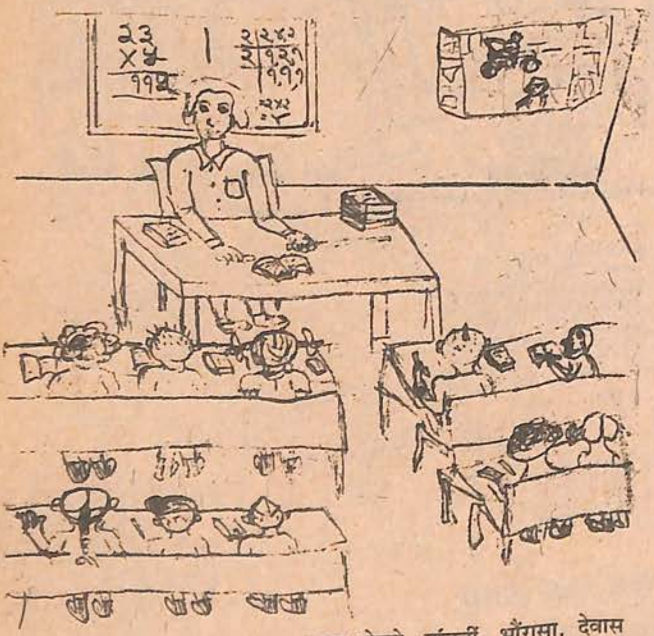

अजय रोजड़े, पांचवीं, भौंरासा, देवास

कुछ लड़कों ने स्कूल की तरक्की देखकर अपने माता-पिता से अनुरोध किया कि हम भी उस स्कूल में पढ़ेंगे। तब कुछ माता-पिताओं ने उनका नाम प्राइवेट स्कूल के बजाय सरकारी स्कूल में ही लिखा दिया। कुछ लड़कों के मां-बाप ने कहा, नहीं सरकारी स्कूल में अनुशासन नहीं सिखाते।

सरकारी स्कूल में कुछ लड़के पढ़ने आते थे। एक महीने बाद संख्या बढ़ने लगी। फिर बहुत से लड़के स्कूल में आने लगे। अभी सभी विषयों के पहले अध्याय ही चल रहे थे। कुछ लड़के अपनी नई पुरानी दुश्मनी निकालने लगे।

अब क्या था। दो टीमें तैयार हो गईं। फिर वह दिन आ ही गया, जब महासंग्राम की शुरूआत होनी थी। एक दिन दो चक्र (पीरियड) खाली थे। सर छुट्टी पर थे। खाली पीरियड में दोनों टीमों के कप्तानों में बहस होने लगी। फिर एक दूसरे पर पुस्तकें फेंक कर लड़ाई होने लगी। कुछ देर बाद दोनों टीमें आपस में भिड़ गईं। पढ़ने वाले तथा सीधे-सादे लड़के बाहर आ गए। अंदर महासंग्राम होने लगा। फिर एक लड़के ने अचानक कुर्सी फेंकी। तभी दूसरे लड़के ने कुर्सी फेंकी। बस फिर कुर्सी युद्ध होने लगा। एक लड़का टारजन बनकर पंखे से लटक गया। और अन्य लड़कों को अपने पैरों से मारने लगा।

कुछ लड़के प्रिंसिपल के पास सूचना लेकर पहुंचे, तब प्रिंसिपल ने आकर लड़ाई को शांत करवाया और लड़कों को सजा दी। जब दूसरे दिन लड़के पढ़ने आए तब क्लास की हालत देखी। कुछ कुर्सियों के पैर टूट गए थे, पंखे की तीन पंखियों में से एक ग़ायब हो गई थी।

अब आधे लड़के कुर्सियों पर बैठे, बाकी लड़के खड़े थे। फिर क्लास टीचर से कहा गया कि बाकी कुर्सियां सुधरवाई जाएं। तब उन्होंने कहा कि जब तक बाकी कुर्सियां सुधरकर नहीं आतीं, तब तक आप लोग ज़मीन पर बैठें। और उन्होंने बाकी कुर्सियां जो महासंग्राम में बचीं उन्हें स्टोर रूम में रखवा दिया। सब लोग ज़मीन पर बैठने लगे। फिर गर्मियों का मौसम आया तो पंखे की ज़रुरत पड़ी। पंखा भी स्टोर रूम में पहुंच चुका था। बस पुराने स्कूल की तरह बिना पंखे के ही बैठने लगे। सब सोच रहे थे कि अगर पंखा होता तो कितना अच्छा रहता।

□ सुदीप राय, छतरपुर

हमारा गांव

हमारा गांव नीचे सिर ऊपर पांव
जब गांव में पानी आया
लोगों का मन भर आया
जब गांव में कीचड़ आया
गंदगी के सिवा कुछ ना फैलाया
ढेर सारी बीमारियों का उपहार लाया

जिधर देखो उधर कीचड़ ही कीचड़
घर सामने कीचड़, बज़ार में कीचड़
हर गली में कीचड़ हर राह में कीचड़
इतना कीचड़ कहां से आया
इतना कीचड़ कहां से आया
हमारा गांव नीचे सिर ऊपर पांव

□ महावीर जैन, आठवीं,
देहरिया साहू, देवास

कावेरी

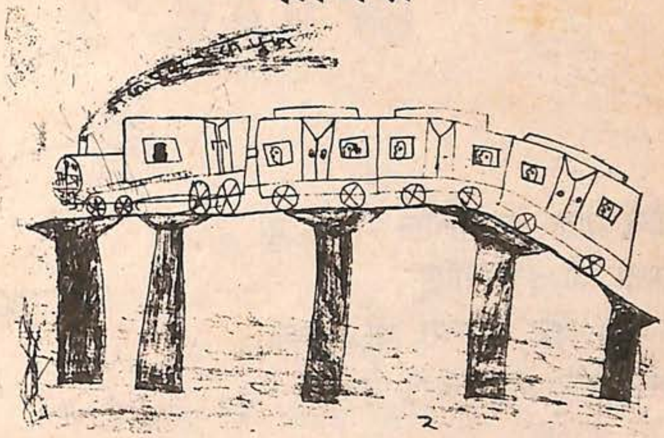

रिजवान खान, आगर छावनी, शाजापुर

पुल के नीचे से नदिया बहती
उसका नाम है कावेरी
हम सबकी वह प्यास बुझाती
नलकों में पानी वह लाती
आते-जाते को बहलाती
वह सबसे गंदी हो जाती
पुल के नीचे से नदिया बहती
उसका नाम है कावेरी!

□ स्वाति, आठ वर्ष

मैं बहुत खुश हुआ

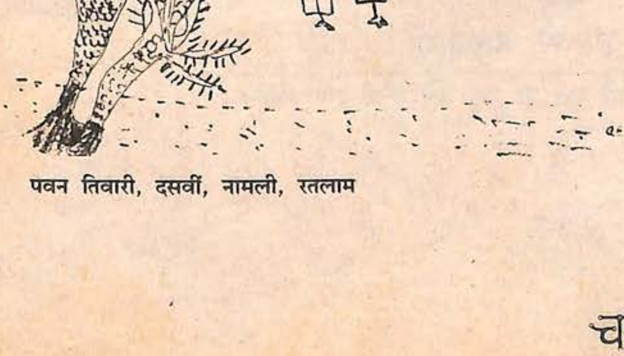

पवन तिवारी, दसवीं, नामली, रतलाम

एक दिन मेरे बड़े भैया ने बाज़ार कलम लाने के लिए भेजा। उसने मुझे तीन रुपए दिए। रास्ते में एक छोटी-सी लड़की को मैंने रोते देखा। मैंने उसके नज़दीक जाकर रोने का कारण पूछा। वह बोली, मां ने मुझे कुछ पैसे सामान लाने के लिए दिए थे, उसमें से डेढ़ रुपए कहीं गिर गए। अब मैं घर जाऊंगी तो मां मुझे बहुत मारेगी।

मैंने उसे अपने पास से डेढ़ रुपया दे दिया और कहा, चुप हो जा। घर लौटकर मैंने भैया को बताया। मैं डर रहा था कि भैया डांटेगा। पर भैया ने डेढ़ रुपए और दिए और कहा, जाओ कलम ले आओ।

मैं बहुत खुश हुआ!

□ जय कुमार, छह वर्ष, गोगारी (बिहार)

मालू भालू

नौर्थ पोल के बर्फ़ीले मैदान में
रहती थी इक भालू
उजला बर्फ़ सा रंग था उसका
और नाम था उसका मालू

उम्र में छोटी थी मालू
रहती थी मां बाप के संग
खूब से सीगल दोस्त थे उसके
बर्फ़ में सब करते हुड़दंग

इक दिन अब्बा भालू बोले
बेटी हो जाओ होशियार
सुना है दुष्ट शिकारी आकर
करने लगे हैं यहां शिकार

मालू छिपना सीख चुकी थी
झट वह हो गई गोल मटोल
बंद की उसने आंखें अपनी
लगे बर्फ़ की बॉल वह गोल

आंखें फाड़े भटके शिकारी
पर शिकार वे देख न पाए
थक हार कर लौटे जब वे
सारे भालू फिर बाहर आए

धीरे धीरे मां बाप ने
मालू को सब सिखलाया
सालमन मछली कैसे पकड़ें
यह भी उसको बतलाया

सीगल, उत्तरी ध्रुव पर पाई जाने वाली एक चिड़िया।

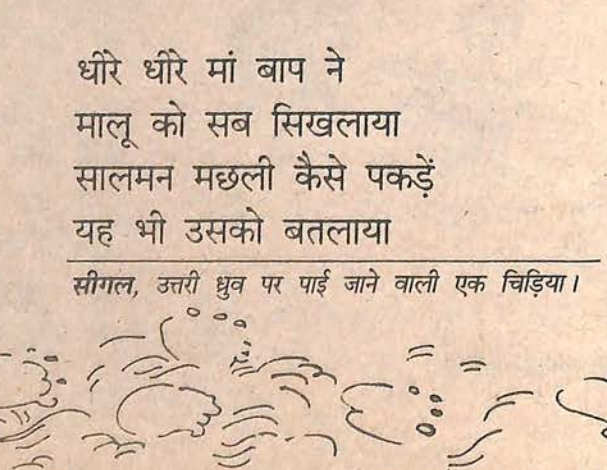

मालू कहां

इक दिन मालू मां से बोली
मां मैं सैर को जाऊंगी
आसमान के पार है क्या
यह मैं देख कर आऊंगी

मां ने कहा धर धीरज बेटी
अगली गर्मी जब आएगी
तैरना तुझे सिखा देंगे हम
तब तू दूर घूम पाएगी

कैसा धीरज कैसी गर्मी
मालू को था चैन कहां
उसके दिल में जोश था ऐसा
घूम वह आती तीन जहां

मां बाप को बिना बताए
मालू करने निकली सैर
सूरज की किरणों की ओर
बढ़ने लगे थे उसके पैर

मालू की मां चौंकी
जब मालू उसको नज़र न आई
मालू मालू कह कर उसने
ज़ोरों से आवाज़ लगाई

मालू !!

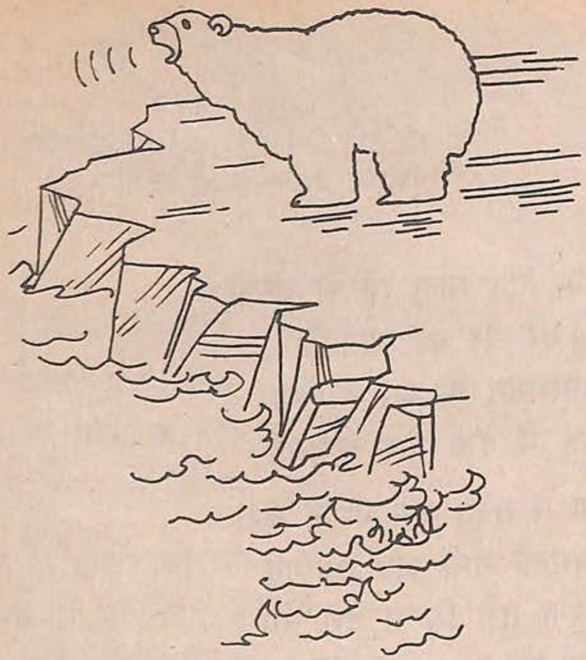

मालू पहुंच चुकी थी दूर
उस तक न पहुंची आवाज़
इक छोटी सी सीगल ने
मां को कहा मालू का राज़

सीगल बोली भालू मासी
मालू गई सूरज की ओर
यह सुन कर मालू की मां
दौड़ पड़ी लगा कर ज़ोर

इतने में मालू की मां को
सुनाई पड़ी पुरज़ोर गड़गड़ाहट
उस बेचारी को तो अब
होने लगी कुछ और घबराहट

जिस बर्फ़ीली चट्टान पर
थी मालू जा कर हुई खड़ी
वही चट्टान बनी आईसबर्ग
और आईस बैंक से छिटक पड़ी

मालू संग उस आईसबर्ग को
ज्वार बहा कर लिए जाता था
डरी हुई छोटी मालू को
कुछ भी समझ नहीं आता था

छपाक! मालू की मां ने
पानी में दी लगा छलांग
बहते आईसबर्ग पर पहुंची
बर्फ़ीले पानी को लांघ

डरी मालू को पहले मां ने
अपनी छाती से चिपकाया
तैरना होगा आज उसे भी
मां ने बेटी को समझाया

***आईसबर्ग**, बर्फ़ की एक तैरती हुई चट्टान।*
***आईसबैंक**, बर्फ़ीली ज़मीन का किनारा।*

मालू बोली कभी नहीं तैरी हूं
आज मैं तैरूंगीं कैसे
मां बोली घबरा मत बेटी
करना वही करूं मैं जैसे

तैरे बिना न चारा कोई
समझ यह बात मालू को आई
पकड़ हाथ बहादुर मां का
उसने पानी में छलांग लगाई

बहादुर मां की बहादुर बेटी
छोड़ छाड़ कर अपना डर
लगी तैरने जैसे तैसे
अपनी पूरी हिम्मत धर

कुदरती तैराक है मालू
मां तो उसकी जानती थी
मालू की निडरता को भी
बखूबी वह पहचानती थी

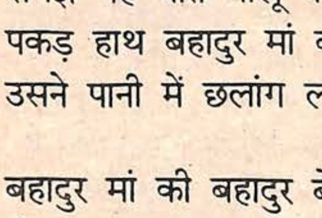

कुछ ही देर में मिला किनारा
बच गई मालू की जान
मां बेटी के चेहरे पर फिर
फूट पड़ी सुन्दर मुस्कान

मालू के अभिनंदन को
किनारे पर थी भीड़ खड़ी
पापा भालू, सीगल
और खड़ी इक सील बड़ी।

□ कमला भसीन

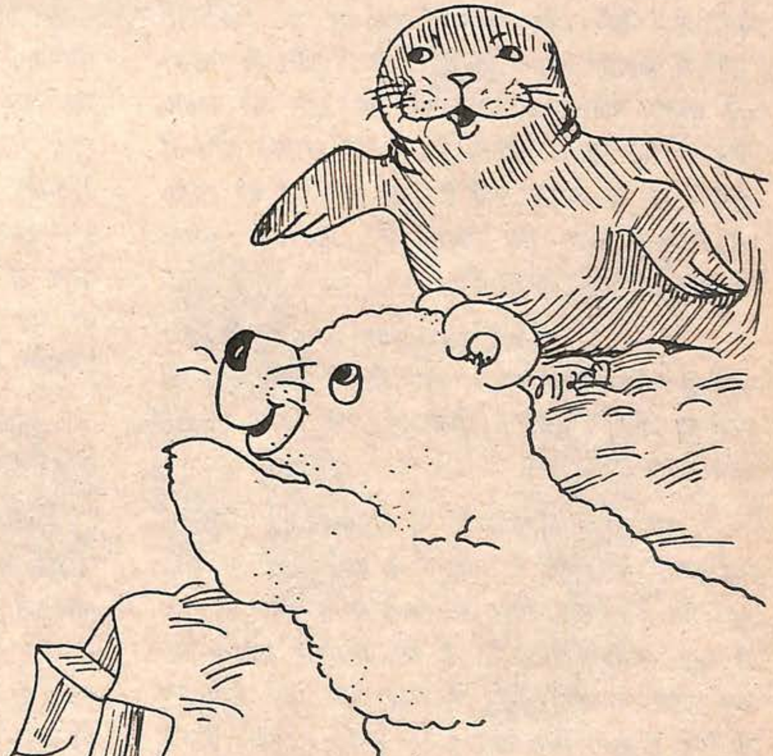

किलकिला

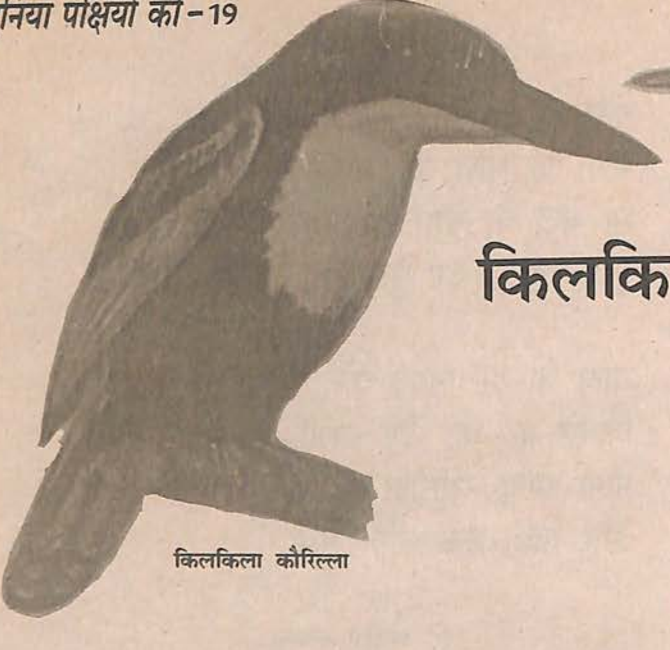

किलकिला कौरिल्ला

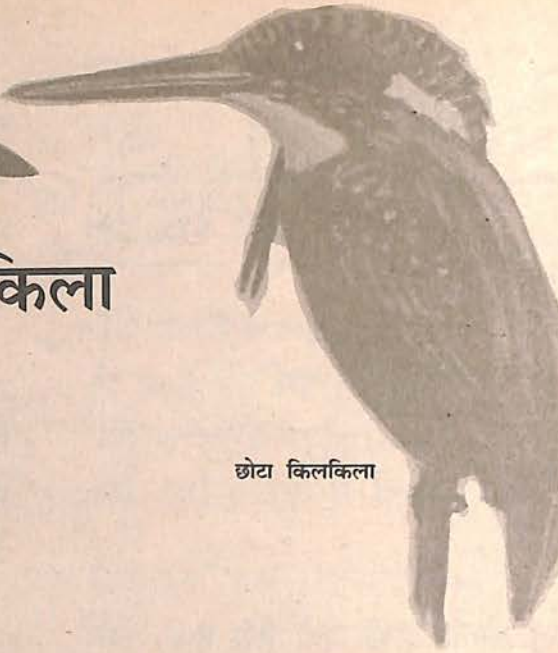

छोटा किलकिला

किसी तालाब के किनारे तुमने देखा होगा कि एक चितकबरा पक्षी हेलीकॉप्टर की तरह मंडरा रहा है। देखते ही देखते वह पानी में गोता लगाता है और चोंच में एक मछली लिए बाहर आता है और मज़े की बात यह है कि उड़ते-उड़ते ही मछली को निगल भी जाता है।

वहीं तालाब के किनारे पेड़ पर एक अन्य पक्षी बैठा है। नीले और केसरिया रंग का यह पक्षी भी पानी में छलांग लगाता है और अपनी चोंच में मछली को दबाए बाहर आता है। पर यह उड़ने की बजाए फिर से पेड़ पर जा बैठता है। मछली उसकी चोंच में दबी अभी भी छटपटा रही है। वह उसे पेड़ की शाखा पर पटक-पटककर मार डालता है और फिर आराम से उसका भोजन करता है।

ये दोनों ही पक्षी किलकिला के नाम से जाने जाते हैं। पानी में गोता लगाकर मछली पकड़ना इनकी विशेषता है। इसीलिए अंग्रेज़ी में इन्हें **किंग फिशर** कहा जाता है।

भारत में किलकिलों की लगभग 27 जातियां पाई जाती हैं। यहां दो जातियों के किलकिलों के चित्र दिए गए हैं। इनमें सबसे अधिक परिचित और बहुतायत से पाई जाने वाली जाति है **किलकिला कौरिल्ला**! इस जाति के किलकिले के पंख और पूंछ नीले रंग के होते हैं तथा सिर और शरीर कत्थई रंग के। इसकी छाती पर पाया जाने वाला बड़ा सफ़ेद धब्बा इसकी ख़ास पहचान है। इस धब्बे से ऐसा लगता है मानो इसने कत्थई रंग का कोट और सफ़ेद रंग की कमीज़ पहन रखी है। इसकी चोंच लंबी और लाल रंग की होती है। 'कीलीऽ लीऽ लीऽ' आवाज़ निकालने के कारण इसका नाम किलकिला पड़ा है। नर और मादा एक-से दिखाई पड़ते हैं। इसका आकार मैना और कबूतर के बीच का होता है।

पानी में पाए जाने वाले जीव-जंतुओं के अतिरिक्त यह ज़मीन पर पाए जाने वाले कीड़े, गिरगिट आदि भी खा लेता है। इसीलिए यह पानी से दूर जंगलों में, खेतों में भी पाया जाता है। किसी पेड़, बिजली या टेलीफोन के खंभे पर बैठकर यह अपनी पैनी नज़र से इधर-उधर देखता रहता है। जैसे ही कोई शिकार दिखाई पड़ता है उसे झपट कर पकड़ लेता है। अवसर मिलने पर यह पानी से भरे गड्ढों, धान के खेतों, नदियों, तालाबों आदि से मछली भी पकड़ता है।

छोटा किलकिला आकार में गौरय्या के बराबर होता है। इसकी चोंच लंबी, सीधी और नुकीली होती है।

किलकिला कौरिल्ला का प्रजनन काल मार्च से जुलाई तक होता है। नर और मादा मिलकर किसी नाले के किनारे की मिट्टी में सुरंग बनाकर उसके अंत में एक गोल, कमरे के समान घोंसला बनाते हैं। इसमें मादा 4 से 7 सफ़ेद अंडे देती है। नर और मादा दोनों मिलकर अंडों को सेते हैं और बच्चों का पालन-पोषण करते हैं।

☐ अरविंद गुप्ते

(चित्र सौजन्य : नेचुरल हिस्ट्री सोसायटी, बॉम्बे)

पिछले अंक में तुमने अपनी उंगलियों और अंगूठे पर इंक पेड की स्याही लगाकर विभिन्न आकृतियां बनाने की कोशिश की होगी। क्या तुम कुछ अन्य आकृतियां भी बना पाए? चलो इस बार हम ही तुम्हें कुछ नई आकृतियों के बारे में बताते हैं। देखो और बनाओ।

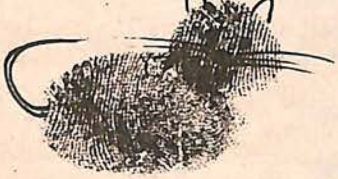

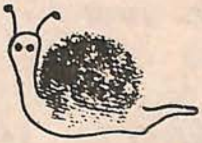

पृथ्वी के दो छोर

तुम **'क्यों... क्यों...?'** वाली मुनिया को जानते हो न! हां, वही जो सवाल पे सवाल पूछा करती है। अभी तक तो चिट्ठी ही लिखती थी, पर एक दिन खुद ही आ धमकी और बैठ गई आसन लगाकर हमारे सामने। हमने सोचा अब मरे! मुनिया हमारे कमरे को ध्यान से देख रही थी, बहुत तेज़ नज़रें हैं उसकी। कमरे के एक कोने में ग्लोब रखा था। मुनिया की नज़र ग्लोब पर अटक गई। मुनिया उठी और ग्लोब के सामने जा खड़ी हुई। फिर उसे घुमाने लगी। वह उससे पांच-दस मिनट खेलती रही, देखती रही, उस पर लिखी जगहों, महाद्वीपों, सागरों के नाम पढ़ती रही।

फिर मुनिया तेज़ गति से आई और धम्म से बैठ गई। और बिना हमें कुछ कहने-पूछने की मोहलत दिए शुरू हो गई—

— पृथ्वी के उत्तरी छोर पर क्या है?
— पृथ्वी के दक्षिणी छोर पर क्या है?
— क्या वहां भी लोग रहते हैं?
— सुना है वहां बहुत ठंड पड़ती है?
— क्यों पड़ती है इतनी ठंड?
— सुना है वहां छह महीने दिन और छह महीने रात होती है?

हमने कहा, "अब बस भी करो। अपने बस का रोग नहीं है, इन सवालों के जवाब देना। सवालीराम से ही पूछना पड़ेगा।"

सवालीराम सो रहे थे, अपना नाम सुनते ही जाग गए। "किसने लिया मेरा नाम!"

हमने कहा, "हमें मालूम था, सवाल सुनते ही चौकन्ने हो जाते हैं आप। ये मुनिया आई हैं आपकी ख़बर लेने। अब आप ही निपटो इनसे।"

बस सवालीराम शुरू हो गए। मुनिया ने अपना आसन उनके सामने जमा लिया। सवालीराम ग्लोब उठा लाए। (तुम भी सामने दिया चित्र देखो।) और बोले,

"देखो मुनिया—

उत्तर में है... आर्कटिक महासागर

दक्षिण में है... अंटार्कटिक महाद्वीप"

"वाह, क्या मज़ेदार बात है—एक छोर पर सागर, दूसरे पर महाद्वीप।"

"आर्कटिक महासागर को उत्तर ध्रुव महासागर भी कहते हैं। आओ देखते हैं कि पृथ्वी पर अन्य महाद्वीप व सागर कौन-कौन से हैं?"

तुम भी ढूंढो।

"पर मुनिया एक मज़ेदार बात है, यहां ग्लोब पर (नक्शे में भी) आर्कटिक महासागर अन्य सागरों की तरह दिख रहा है।"

"हां, दिख रहा है।"

"पर वह है नहीं!"

"क्या मतलब?"

"मतलब यह कि वहां बर्फ़ है!"

"यानी आर्कटिक सागर का पानी बर्फ़ के रूप में जमा हुआ है?"

"हां, पूरा नहीं—अधिकांश हिस्सा! और जब बर्फ़ है तो ज़ाहिर है वहां खूब ठंड होगी।"

मुनिया की आंख दक्षिणी छोर पर लगी हुई थी। बोली, "लेकिन दक्षिण में भी तो बर्फ़ ही दिखाई पड़ती है।... फिर क्या फ़र्क है उत्तर से?"

"बात तो सही है। वास्तव में वहां भूमि है, लेकिन बर्फ़ से ढकी हुई। कहीं... कहीं... तो भूमि के ऊपर दो-तीन किलोमीटर मोटी बर्फ़ की परत है। यही नहीं अंटार्कटिक महाद्वीप समुद्र से लगभग 5000 फुट की ऊंचाई पर है। वहां 17,000 फुट ऊंचा एक पर्वत भी है, जिसका नाम है—विनसन मैसिफ। ज़रा ग्लोब में ढूंढो।"

तुम भी चकमक का पिछला आवरण देखो। वहां

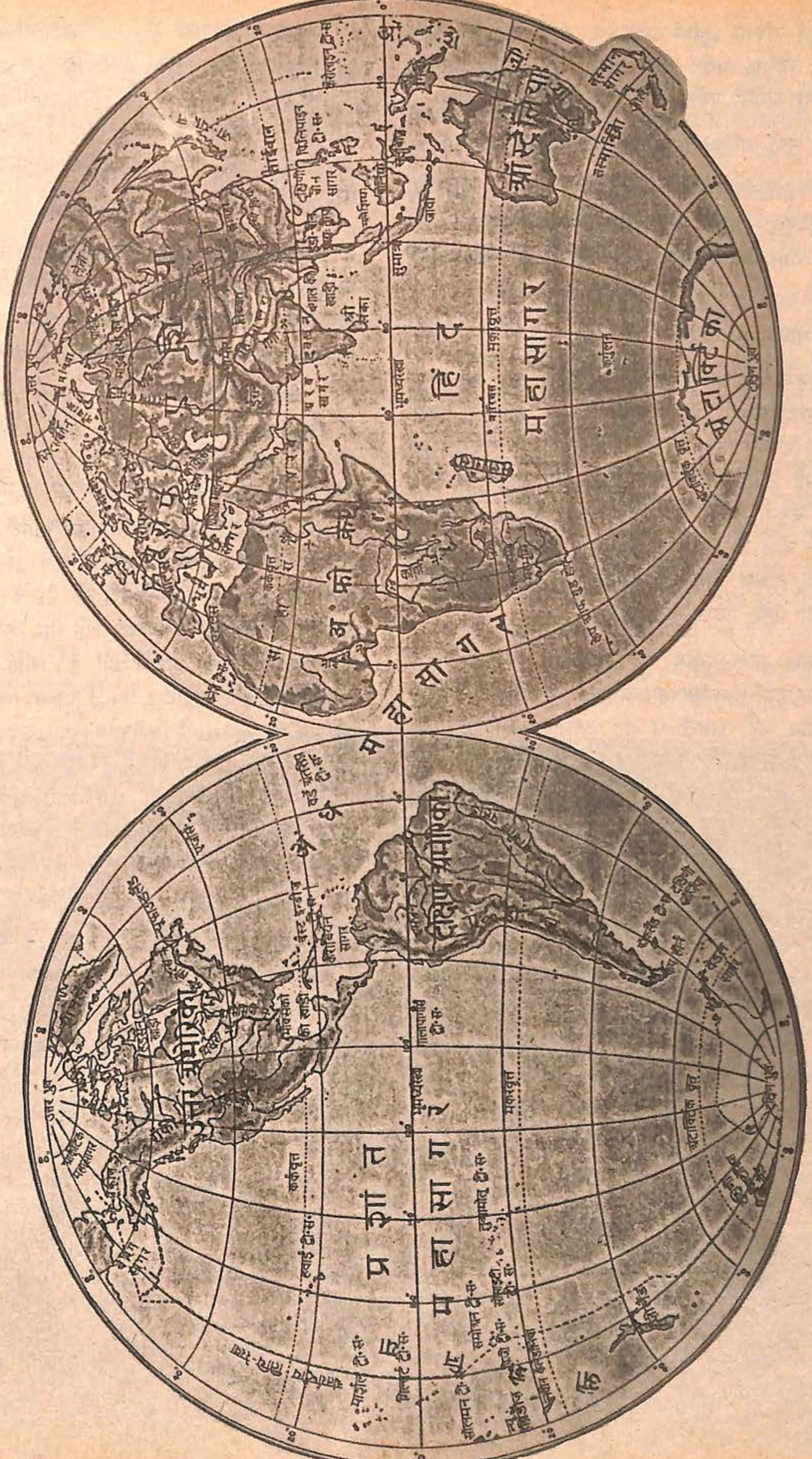
उत्तर अमेरिका
प्रशांत महासागर
दक्षिण अमेरिका
अफ्रीका
एशिया
हिंद महासागर
ऑस्ट्रेलिया
अंटार्कटिका
कर्कवृत्त
मकरवृत्त
भूमध्यरेखा
उत्तर ध्रुव
दक्षिण ध्रुव

उत्तर एवं दक्षिण ध्रुवीय प्रदेश के नक्शे दिए हैं। उसमें विनसन मैसिफ पर्वत ढूंढ सकते हो। इसके अलावा भी अन्य जगहें, पर्वत आदि तुम देख सकते हो।

"क्यों मुनिया मिला-विनसन मैसिफ?"

"सवालीराम जी वो तो मिल गया। पर हमें ऐसे ऊबड़-खाबड़ तरीके से जानकारी नहीं चाहिए। ज़रा क्रमवार और विस्तार से बताएं।" मुनिया ने अपनी आंखें मिचकाईं।

सवालीराम बोले, "तो सुनो।"

सबसे पहले हम यह देखें कि ये ध्रुवीय क्षेत्र कहां तक हैं। वनस्पतिशास्त्री यह मानते हैं कि उत्तर में जहां वनस्पति मिलना खत्म हो जाती है, वहीं से ध्रुवीय क्षेत्र शुरू होता है। लेकिन इस आधार पर दक्षिण के बारे में कुछ कहना बेकार है। क्योंकि उत्तर में तो आर्कटिक सागर के नीचे ही भूमि का अधिकांश हिस्सा है। लेकिन दक्षिण में, दक्षिण अमेरिका महाद्वीप के बाद अंटार्कटिक तक भूमि नहीं, सागर ही लहराता है।

कुछ लोग ध्रुवीय क्षेत्र को वहां से शुरू मानते हैं जहां पर गर्मी में अधिकतम तापमान 10° सेल्सियस होता है। लेकिन कई कारणों से यह आधार अंटार्कटिक के लिए सही हो सकता है, पर आर्कटिक के लिए नहीं!

सबसे उम्दा परिभाषा, पृथ्वी की ब्रह्मांड में जो स्थिति है, उससे मिलती है। हम जानते हैं कि पृथ्वी सूर्य का चक्कर लगाती है। पृथ्वी इस परिक्रमा के तल पर, अपनी धुरी पर 23½° झुकी हुई है। इस वजह से पृथ्वी पर दो ऐसे क्षेत्र हैं जहां एक मज़ेदार बात होती है। 22 जून को उत्तर क्षेत्र में 66½° और इससे अधिक देशांष पर सूर्य डूबता ही नहीं है। लेकिन इसी समय उधर दक्षिणी ध्रुव में सूर्य उगता ही नहीं है।

इसका ठीक उल्टा 22 दिसंबर को होता है—मुनिया सोच लो कि उल्टा क्या होगा। यहां दिए चित्रों में दोनों स्थितियां समझी जा सकती हैं।

66½° देशांष से हम जितना किसी भी ध्रुव की ओर जाते हैं—'**रात**' और '**दिन**' का समय बढ़ता ही जाता है। यहां तक कि ठीक ध्रुव के पास सूर्य छह महीने क्षितिज के ऊपर रहता है और छह महीने नीचे। यानि छह महीने का 'दिन' होता है और छह महीने की 'रात'।

अब थोड़ा अंदाज़ लगाएं इन दोनों ध्रुव प्रदेशों के क्षेत्रफल का! आश्चर्य की बात है कि दोनों लगभग बराबर हैं। आर्कटिक सागर 1,42,45,000 वर्ग किलोमीटर व अंटार्कटिक महाद्वीप 1,32,09,000 वर्ग किलोमीटर।

वास्तव में तो ये दोनों ध्रुवीय प्रदेश एक-दूसरे से इतने भिन्न हैं जितने दो 'ध्रुव'। लेकिन कुछ समानताएं भी हैं। सबसे बड़ी समानता है—ठंड। दोनों ध्रुवों पर कड़ाके की ठंड, बर्फ़ीली हवाएं और चारों तरफ बर्फ़ ही बर्फ़ होती है। अंटार्कटिक तो इस मामले में आर्कटिक से बीस ही है। बर्फ़ीली आंधियां वहां 320 किलोमीटर प्रति घंटा की गति तक रिकार्ड की गई हैं। दूसरी तरफ तापमान भी-**88.3°** सेल्सियस तक गिर जाता है। इसके मुकाबले आर्कटिक कुछ 'गर्म' है। वहां सबसे कम तापमान-**71.1°** सेल्सियस रिकार्ड किया गया है। दूसरी समानता है प्रकाश के करिश्में। चाहे वह सूर्य का हो या चंद्रमा का, प्रकाश आंखों को ऐसे-ऐसे कोण दिखाता है कि वहां से अपरिचित व्यक्ति तो चौंक ही उठता है। विभिन्न रंग, विभिन्न आकृतियों में दिखते हैं, अपने जाने-पहचाने इंद्रधनुष से भी कई गुना चौंकाने वाले।

जहां तक भिन्नता का सवाल है, वह सबसे अधिक जीवित चीज़ों के होने न होने में है। आर्कटिक में 'ग्रीष्म ऋतु' नाम को तो है (यानि जब तापमान शून्य से कुछ अंश ऊपर रहता है)। इसके कारण आर्कटिक सागर के पास ज़मीन पर इस ऋतु में वनस्पति उग आती है। लेकिन यह वनस्पति हमारे आसपास उगने वाली वनस्पति जैसी नहीं है। वहां उगने वाली वनस्पति में अलग-अलग प्रकार की **काई, लाइकिन**

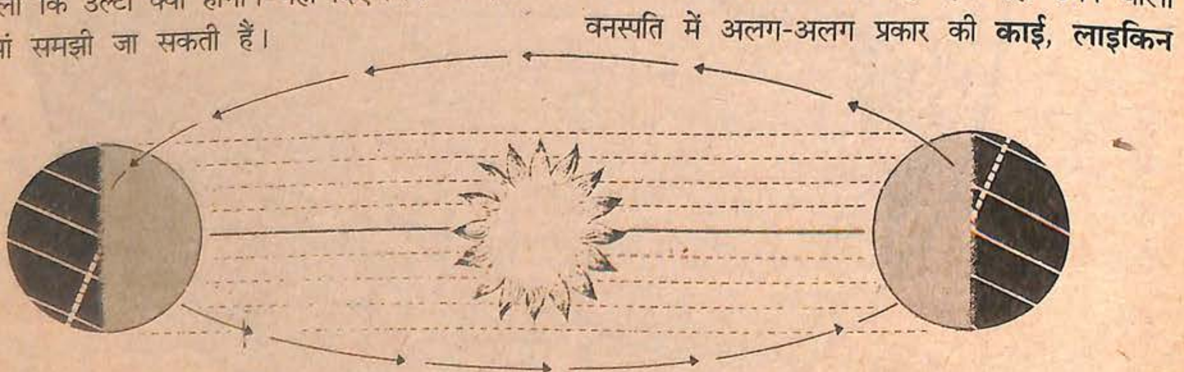

वगैरा हैं। अंटार्कटिक में ऐसा कुछ नहीं है।

"इन ध्रुवीय प्रदेशों पर पाए जाने वाले जनजीवन के बारे में भी बताइए न! बहुत मज़ेदार होगा शायद!" मुनिया बोल पड़ी।

"हां, सचमुच मज़ेदार है।" सवालीराम बोले। "पहले वहां के जीव-जंतुओं के बारे में बताते हैं।"

विपरीत परिस्थितियों के बावजूद अंटार्कटिक में जीव-जंतुओं की संख्या काफ़ी बड़ी है। हां, जातियां ज़रूर कम हैं, लेकिन हरेक जाति में सदस्यों की संख्या काफ़ी अधिक है। जबकि गर्म इलाक़ों में अनेक जातियां पाई जाती हैं। बात ठीक भी है, आखिर कुछ ख़ास क़िस्में ही ऐसी होंगी, जो कड़कती ठंड में रहने के क़ाबिल होंगी। कुल मिलाकर अंटार्कटिक में 70 से भी कम जंतुओं की क़िस्में पाई जाती हैं। इनमें से कीड़े-मकोड़ों की किस्में केवल 44 हैं (याद रहे शेष पृथ्वी पर हर 10 जीवितों में 9 कीड़े-मकोड़े हैं)। अंटार्कटिक पर भूमि पर रहने वाला एक भी स्तनधारी नहीं है, एकमात्र स्तनधारी पानी में पाई जाने वाली **व्हेल** है। अन्य जीवितों में अधिकांश पक्षी हैं। इनमें से भी एक दर्जन से कम क़िस्में ही सुदूर दक्षिण में पाई जाती हैं। इनमें **स्कुआ**, **पैंगुइन**, **टर्न**, **गल** व **पैट्रल** प्रमुख हैं।

पैंगुइन की अनेक जातियां हैं, लेकिन सभी की बाहरी रचना एक जैसी है—एक ऐसा आकार जिसे तेज़ हवा में भी खड़े रहने में दिक़्क़त न आए। उस पर सफ़ेद व काले पंख रहते हैं, जिन्हें हम बांहें कहते हैं। ये पंख या बांहें ही पैंगुइन को तैरने में चप्पुओं की तरह मदद देती हैं।

बसंत ऋतु आते ही एडिलई जाति का पैंगुइन बर्फ़ पर चलकर ज़मीन पर पहुंचता है, अपनी नई पीढ़ी बनाने। नर एडिलई बड़ी औपचारिकता के साथ अपनी मादा को एक पत्थर भेंट करता है, जो आमतौर पर किसी दूसरे पैंगुइन के घोंसले से चुराया हुआ होता है। बात मज़ाकिया लगती है, लेकिन है बहुत महत्त्व की। जब मादा अंडा देती है तो उसे इसी पत्थर से टिकाया जाता है और फिर नर और मादा बारी-बारी से अंडे के ऊपर बैठते हैं। चाहे आंधी आए चाहे तूफ़ान, जब तक अंडे से बच्चा निकल नहीं आता, दोनों अंडे को सेते रहते हैं। हज़ारों पैंगुइन इसी प्रकार अंडों को सेते हुए महीनों खड़े रहते हैं। इस बीच वे कुछ नहीं खाते। एम्परर जाति में मादा पैंगुइन अंडा देने के बाद पानी की ओर चली

पैंगुइनों में नर और मादा मिलकर बच्चे का पालन-पोषण करते हैं। एक नर एम्परर पैंगुइन अंडे को अपने पांवों के बीच फंसा रहा है। मादा देख रही है कि नर अपना काम ठीक-ठाक ढंग से कर रहा है या नहीं! 63 दिन बाद अंडे से बच्चा निकलेगा। मादा तब तक दूर पानी के पास रहेगी और नर अंडे को सेता हुआ—भूखा, प्यासा!

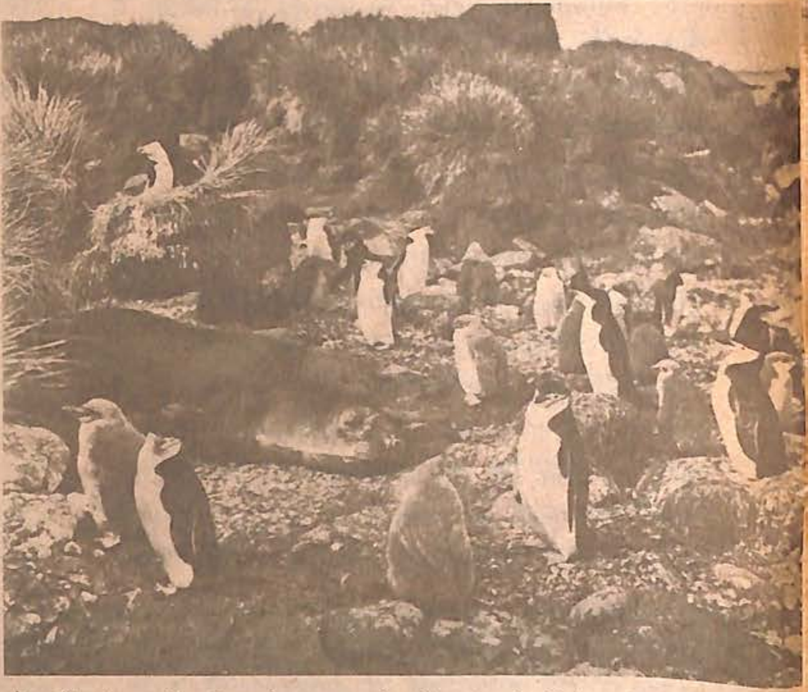

पैंगुइनों की अपनी दुनिया है... पर उनके बीच 'समुद्री सिंह' महाशय को आराम फ़रमाने से कौन रोक सकता है!

शिशु एम्परर पैंगुइन अपने पिता की गर्म गोद से दुनिया देखते हुए....!

वयस्क एम्परर अपने बच्चे के अलावा अन्य बच्चों की देखभाल भी करता है।

जाती है और नर अंडे को सेता रहता है—भूखा, महीनों तक। जब बच्चा पैदा होने वाला होता है, तब कहीं मादा वापस आती है।

"अरे हम तो समझे थे, हमारी मां ही हमारी इतनी देखभाल करती हैं।" मुनिया बोल पड़ी।

"पैंगुइन परिवार में तो बाप भी ज़िम्मेदारी उठाता है। हम मनुष्यों को इनसे सीखना चाहिए, क्यों मुनिया?" सवालीराम बोले।

अंटार्कटिक में पाए जाने वाले प्राणियों में सबसे बड़ा प्राणी ह्वेल है। ह्वेल की भी कई प्रजातियां हैं। ब्लू व्हेल का वज़न 150 टन तक होता है। यह 24 घंटे में लगभग तीन टन क्रिल नामक छोटे जंतुओं का भोजन करती है। भीमकाय होने के बावजूद ह्वेल मनुष्य को डरा नहीं सकी है। मनुष्य लगातार इसका शिकार कर रहा है। अंटार्कटिक में 1930-31 में ही लगभग 37,500 ह्वेल मारी गई थीं। लेकिन अब इनकी संख्या बहुत कम रह गई है।

आर्कटिक क्षेत्र में भी शिकार के कारण ह्वेलों की संख्या सालों पहले ही काफ़ी कम हो गई थी। बावजूद इसके अभी भी पांच-छह जातियों की व्हेल यहां मिलती हैं। इनमें सफ़ेद व्हेल भी एक है। पर वे भी एस्कीमो लोगों की शिकार हो रही हैं।

सील, **वाल्रस** व **समुद्री सिंह** अन्य अद्भुत प्राणी हैं जो इन ध्रुवीय क्षेत्रों में पाए जाते हैं।

लंबे दांतों व अजीब-सी शक्ल वाले वाल्रस का गोश्त एस्कीमो बड़े चाव से खाते हैं। इसकी चमड़ी, चर्बी व दांतों का उपयोग अन्य कामों में किया जाता है। बहुत पुराने समय में जब इस क्षेत्र में कोई धातु नहीं पहुंची थी, तो वाल्रस के दांत से ही औज़ार बनाए जाते थे। 200 वर्ष पहले लगभग पांच लाख वाल्रस थे, लेकिन अंधाधुंध शिकार के कारण कुछ वर्षों पहले लुप्त होने के कगार पर पहुंच गए थे। अब शिकार पर प्रतिबंध लगने के बाद वाल्रस की आबादी में कुछ वृद्धि हुई है।

"क्यों भई मुनिया, मज़ा आ रहा है न?"

"हां-हां," आप तो बताए जाओ।"

"हां तो अब हम तुम्हें आर्कटिक के सबसे खूंखार प्राणी के बारे में बताते हैं।"

"कौन है वो?"

वो है **ध्रुवीय भालू**। यह बढ़िया तैराक भी है। इसे सागर में पच्चीस-पच्चीस मील दूर तक तैरते पाया गया है। जैसे दक्षिण ध्रुव पैंगुइन से भरा हुआ है, (उत्तर में पैंगुइन पाई ही नहीं जाती) वैसे ही भालू सिर्फ़ उत्तर में ही पाया जाता है। सील उसका प्रमुख भोजन है। सील के अलावा यह भालू—छोटे वाल्रस, मछली, मरी हुई या फंसी हुई व्हेल जानवरों के अंडे भी खाता है। कभी-कभार यह भालू बर्फ़ीले इलाक़े से निकलकर ज़मीन पर भी आ जाता है। ऐसी स्थिति में वह सामान्य भालुओं की तरह घास, जंगली फल व खरगोश आदि खाता है।

बर्फ़ीले मैदानों में इस भालू के पीछे-पीछे एक और मांसाहारी जानवर घूमता है—**आर्कटिक लोमड़ी**। भालू महाशय का बचा-खुचा शिकार खाकर यह अपना पेट भरती है। और कभी-कभी तो इस बेचारी को भालू की टट्टी खाकर ही गुज़ारा करना पड़ता है।

"छी...छी... टट्टी तक खा जाती है, गंदी कहीं की।" मुनिया ने मुंह बिचकाया।

"ऊं... तुम होती वहां तो तुम्हें पता चलता। यहां मुंह बिचकाने से क्या होता है।" सवालीराम बोले।

अच्छा आगे सुनो। आर्कटिक क्षेत्र में, बर्फ़ीले समुद्र के दक्षिण वाले भाग को टुंड्रा प्रदेश कहते हैं। यहां लोगों के अलावा अनेक प्रकार के जानवर भी पाए जाते हैं। जानवरों में सबसे प्रसिद्ध है **रेंडियर** या **कारीबो**। यह जानवर पालतू भी हैं और आज़ाद भी घूमते हैं। **एस्कीमो** व **लेप्प** लोग इन्हें पालते हैं और इनका मांस भी खाते हैं। इनकी खाल से बने कपड़े पहनते हैं। रेंडियर ध्रुवीय क्षेत्रों के हिरण हैं।

"सवालीराम जी, क्या जानवरों के बारे में ही बताते रहोगे। कुछ वहां के निवासियों के बारे में भी तो बताओ।" मुनिया ने कहा।

"हां, वैसे भी मैं तुम्हें बताने ही वाला था।"

अंटार्कटिक को छोड़कर मानव जाति सारी पृथ्वी पर फैली हुई है। आर्कटिक क्षेत्र में हज़ारों वर्षों से मानव आबाद हैं। ऐसा माना जाता है कि पूरी मानव

एक सील... मुंह ऊपर करके ज़ोर से चिल्ला रही है।

सील बर्फ़ के नीचे पानी में रहती है। सांस लेने के लिए यह बर्फ़ की परत में एक छेद बनाकर रखती है। हर 8 से 30 मिनट तक पानी में रहने के बाद सांस लेने या बर्फ़ पर टहलने के लिए ऊपर आती है। सील के शिकारी इसी समय का इंतज़ार करते हैं।

मादा व नर सील, पानी में अठखेलियां करते हुए।

कई मादा सीलों के बीच, एक बड़ा नर।

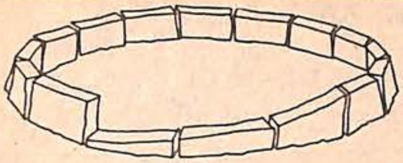

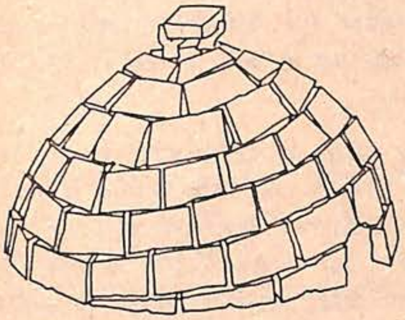

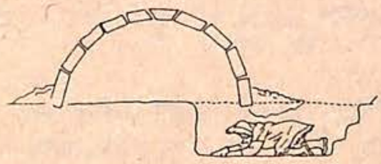

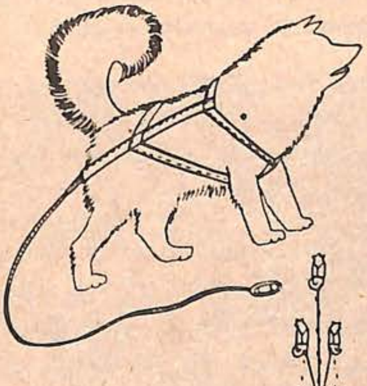

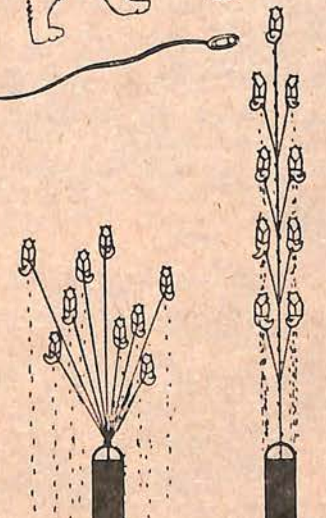

इगलू : बर्फ़ का उलटा कटोरा

आर्कटिक ध्रुवीय क्षेत्र में रहने वाले लोगों के घर इगलू कहलाते हैं। इन्हें बर्फ़ से ही बनाया जाता है। इगलू का आकार डोम के जैसा होता है या उल्टे कटोरे की तरह।

इगलू बनाने के लिए बर्फ़ के ब्लाक इस्तेमाल किए जाते हैं। ब्लाक आमतौर पर 91 × 46 × 15 घन सेंटीमीटर के होते हैं। जिन्हें एक लंबे चाकू की मदद से काटकर बनाया जाता है।

इगलू कैसे बनता है, आओ समझने का प्रयास करते हैं।

***पहला चित्र देखो।** लगभग तीन मीटर व्यास का एक घेरा ब्लाक से बनाया जाता है। यह एक तरह से डोम की नींव है। ब्लाक चढ़ते हुए क्रम में गढ़ाए जाते हैं। ताकि उस पर रखे जाने वाले ब्लाक उनमें फंस जाएं। इससे डोम के गिरने का ख़तरा नहीं रहता है।*

***दूसरा चित्र देखो।** जब इगलू दो-तीन ब्लाक की ऊंचाई का हो जाता है तो उसके एक कोने पर नीचे से एक अस्थायी दरवाज़ा आने-जाने के लिए बना लिया जाता है।*

***तीसरा चित्र देखो।** जब इगलू पूरी तरह बनकर तैयार हो जाता है और आख़िर ब्लाक लगाया जाना होता है तो उसे बहुत सफ़ाई और सावधानी से काटकर लगाया जाता है। ब्लाक के बीच में जो दरार रह जाती हैं, उन्हें बर्फ़ से भर दिया जाता है। अस्थायी दरवाज़े को भी बंद कर दिया जाता है और स्थायी दरवाज़ा बनाया जाता है।*

***चौथा चित्र देखो।** इगलू का स्थायी दरवाज़ा हमें दिखाई नहीं देता है। वह वास्तव में इगलू के सामने बने गड्ढे में से होकर सुरंग के रूप में जाता है। एस्कीमो रेंगकर इगलू में प्रवेश करते हैं। तुम सोच रहे होगे कि ऐसा दरवाज़ा क्यों बनाया जाता है? इसका क्या फ़ायदा है?*

इसके दो फ़ायदे हैं। पहला तो यह कि दरवाज़ा ऊपर न होने से बर्फ़ीली हवाएं इगलू के अंदर नहीं जा पातीं। दूसरा फ़ायदा यह है कि सुरंग के कारण सुरंग और डोम के अंदर की हवा का तापमान लगभग 60° रहता है। जो एस्कीमो लोगों के शरीर के तापमान के बराबर ही है। इससे वे इगलू के अंदर बहुत कम वस्त्रों में भी आराम से रह सकते हैं।

परिवहन : सिर्फ़ कुत्ता गाड़ी में

आर्कटिक क्षेत्र में परिवहन का एक मात्र साधन स्लेज़ गाड़ियां हैं जिन्हें कुत्ते खींचते हैं। यहां दिए चित्र में देखो कि कुत्ते में बेल्ट किस तरह बांधा जाता है। बेल्ट इस तरह बांधा जाता है कि कुत्ते को चलने में दिक़्क़त न हो। बेल्ट वालूरस या सील की खाल से बनाया जाता है।

*स्लेज में कुत्तों को दो तरह से जोता जाता है। '**क**' तरीका तब अपनाया जाता है जब यात्रा खुले-मैदान में करनी हो और तेज़ गति से। जब रास्ता संकरा हो या आसपास पेड़ आदि हों तो कुत्तों को '**ख**' तरीके से जोता जाता है।*

जाति में इतने हिम्मती लोग और कहीं नहीं हैं। ये लोग रूस, केनेडा, नॉर्वे, स्वीडन व अन्य देशों के उत्तरी क्षेत्रों में फैले हुए हैं। इनमें सबसे प्राचीन शायद साइबेरिया के उत्तर में रहने वाले लोग हैं। इनमें **चुकाधीर**, **चुकची**, **कोरायाक** व **याकूत** जाति के लोग शामिल हैं। हम लोग तो ठंड में स्वेटर पहनकर भी ठिठुरते रहते हैं। लेकिन याकूत लोग (जहां ठंड में तापमान-50.6° सेल्सियस तक गिर जाता है) कड़कती ठंड में भी सब कपड़े उतार देते हैं। फिर इन्हीं कपड़ों को ओढ़कर खुले आकाश के नीचे सो जाते हैं। आसपास अलाव ज़रूर जला लेते हैं। उनके बदन पर गिरती बर्फ़ अलाव की गर्मी से पिघलती रहती है, लेकिन उनकी नींद में कोई ख़लल नहीं पड़ता। तुम सो सकते हो भला!

रूस के पश्चिम की ओर, नॉर्वे तक लेप्प जाति के लोग रहते हैं। ये लोग मछली का शिकार करते हैं और रेंडियर पालते हैं। लेप्प लोगों ने ही पांवों में लंबी-लंबी लकड़ियां बांधकर दुनिया को बर्फ़ पर फिसलना सिखाया। बर्फ़ पर फिसलना अब एक खेल के रूप में '**स्कीइंग**' के नाम से जाना जाता है। पर लेप्प लोगों के लिए तो स्की और कुत्तों से जुती स्की गाड़ी ही बर्फ़ पर परिवहन का एक मात्र तरीका है।

''कुत्ता गाड़ी में तो बड़ा मज़ा आता होगा!'' मुनिया बोली।

''अब यह तो तुम वहां जाकर, उसमें बैठकर ही जान सकती हो।'' सवालीराम ने जवाब दिया।

अमेरिका में रहने वाली जाति को एस्कीमो के नाम से जाना जाता है। ये लोग अमेरिका, केनेडा व ग्रीनलैंड में फैले हुए हैं। हालांकि माना जाता है कि आजकल इनकी आबादी लगभग 50,000 रह गई है। लेकिन लेप्प व याकूत जातियों की तरह एस्कीमो भी अब अन्य जातियों के साथ घुल-मिल गए हैं। उन्होंने नए पेशे भी अपना लिए हैं। रहन-सहन भी काफ़ी बदल गया है। स्कूल, अलग-अलग देशों से आता हुआ माल, अन्य जातियों के साथ शादियां आदि सब ऐसे कारण हैं जिनसे आर्कटिक क्षेत्र में रहने वाले लोग अब अन्य क्षेत्रों में रहने वाले लोगों से शक्ल, पोशाक व खाने-पीने की आदतों में अलग नहीं दिखते हैं।

बर्फ़ में बने इनके घरों के बारे में तुमने सुना ही होगा। इन घरों को '**इगलू**' कहा जाता है (बाक्स देखो)। इन्हीं घरों में जानवरों की खालों के बने कपड़े पहने ये लोग रहते हैं।

''मुनिया लगता है अब बहुत हो गया। अपन वापस लौट आएं अंटार्कटिक से अपनी दुनिया में!''

''हां, मैं तो आर्कटिक में थी। अब मैं भी चलती हूं। मां ढूंढ रही होगी।

☐ विनोद रायना, राजेश उत्साही

इस लेख तथा इसके संदर्भ में आए सभी चित्रों एवं सामग्री के लिए आभार : टाइम लाइफ बुक।

एक खुली प्रयोगशाला

अंटार्कटिक महाद्वीप की खोज के बाद संसार भर के देशों की नज़रें उस पर लग गईं। छह देशों .ब्रिटेन, अर्जेंटाइना, चिली, आस्ट्रेलिया नॉर्वे तथा न्यूज़ीलैंड ने आपस में मिलकर एक संधि कर ली और इस महाद्वीप पर अपना दावा जताने लगे। लेकिन अमेरिका और सोवियत संघ जैसे देश चाहते थे कि अंटार्कटिक पर किसी एक देश या गुट का अधिकार नहीं होना चाहिए। वे चाहते थे कि अंटार्कटिक को स्वच्छ रखा जाए और इसे वैज्ञानिक अनुसंधान कार्यों के लिए प्रयोग किया जाए। आखिरकार 1959 में वॉशिंगटन में अंटार्कटिक संधि पर बारह देशों ने हस्ताक्षर किए। इस संधि के तहत यह माना गया कि मानव जाति सदा ही शांति के कार्यों के लिए यहां प्रयोग करेगी।

अंटार्कटिक महाद्वीप पर वैज्ञानिक प्रयोगों के जरिए पृथ्वी और उसके जन जीवन के कई अनसुलझे रहस्यों के बारे में पता लगाया जा रहा है। इनमें मौसम, पृथ्वी की संरचना, पृथ्वी की चुंबकीय शक्ति, बर्फ़ की बनावट, संचार के लिए रेडियो तरंगों का उपयोग आदि शामिल हैं। वास्तव में वहां जो अनुसंधान हो रहे हैं उनके बारे में संक्षिप्त में बताना यहां संभव नहीं है। अंटार्कटिक महाद्वीप एक खुली प्रयोगशाला की तरह है।

तब से वैज्ञानिक अनुसंधानों के लिए विभिन्न देशों ने अपने झंडे यहां गाड़ रखे हैं। इस समय इनकी संख्या 16 है। इनमें भारत भी एक है। यहां इन देशों के अपने 'बेस कैम्प' हैं, जहां उनके अभियान दल आकर अनुसंधान करते हैं।

अब तक भारत के 9 अभियान दल अंटार्कटिक जा चुके हैं। पहला दल 1981 में गया था। इस दल ने वहां एक मानव रहित भारतीय केंद्र स्थापित किया, जिसे 'दक्षिण गंगोत्री' के नाम से जाना जाता है।

1982 में गए दूसरे अभियान दल ने वहां भारत का एक स्थाई 'बेस कैम्प' बनाया। 1983 में गए दल ने भारत के सर्वप्रथम मानव चलित स्थायी केंद्र की स्थापना की। बाद के अभियान दल अपने अनुसंधान इसी 'बेस कैम्प' में करते आ रहे हैं।

(1)

(2)

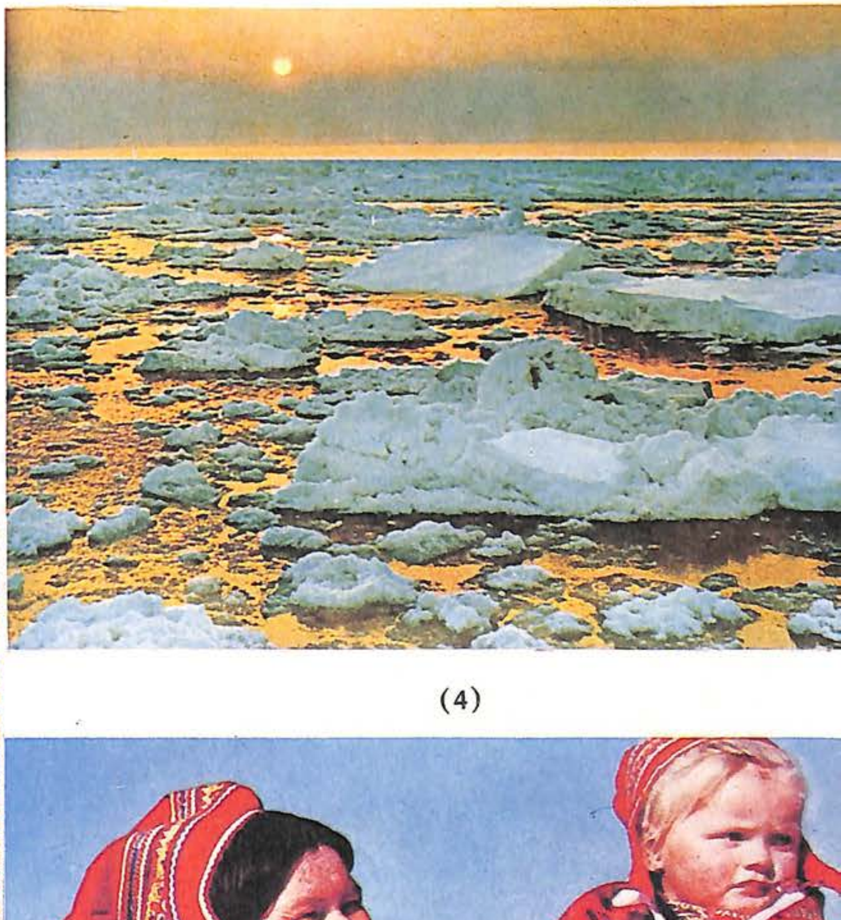

1. दक्षिणी ध्रुव पर एक **'बेस कैंप'**। सामने मैदान में विभिन्न देशों के झंडे लहरा रहे हैं। झंडों के बीच में दक्षिणी ध्रुव है।
2. बसंत ऋतु में उत्तरी ध्रुव की एक रात। हालांकि आसमान में सूर्य दिखाई दे रहा है। यह दृश्य अलास्का के पास चुकची सागर का है।
3. ग्रीष्म ऋतु में ज़मीन पर फूट आई वनस्पति... **मॉस**।
4. रंग-बिरंगे परिधान में नार्वे का एक **लैप्प** बच्चा अपनी मां के साथ।

(3)

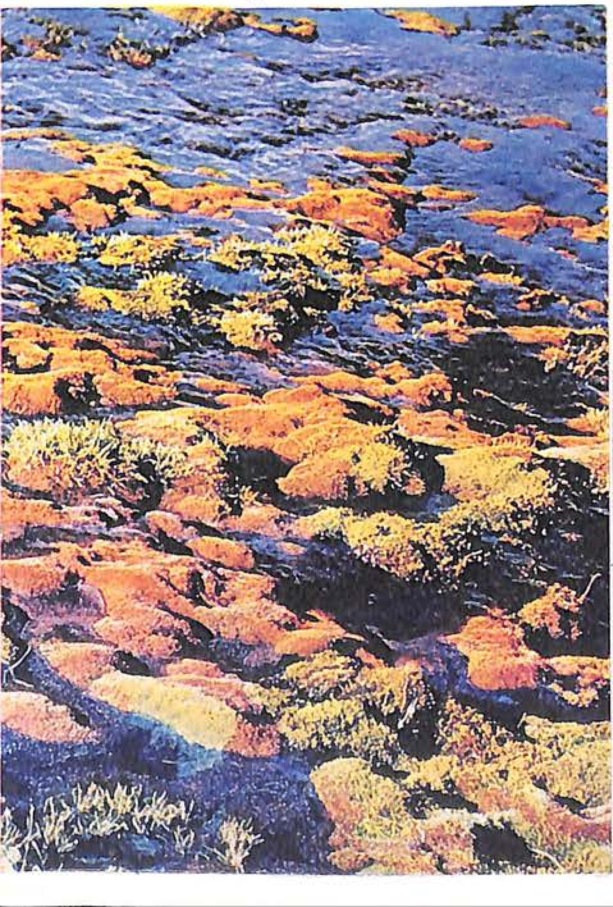

(4)

4.27 शाम 5.27 शाम 6.27 शाम 7.27 शाम 8.27 रात्रि 9.27 रात्रि 11.27 रात्रि 12.27 अर्धरात्रि 1.27 अर्धरात्रि

(2)

1. **छह माह के दिन** समय सूर्य चौबीस घंटों के दौरान अपनी जगह से ऊपर-नीचे खिसकता प्रतीत होता है, लेकिन डूबता नहीं है, हमेशा क्षितिज़ पर बना रहता है। चित्रों के नीचे दिया समय देखो। चित्र एक-एक घंटे के अंतर से लिए गए हैं।
2. **हस्की** जाति के कुत्ते—फुर्तीले और कड़कती ठंड सहन करने वाले। स्लेज गाड़ी खींचने से पहले थोड़ा आराम!
3. स्लेज गाड़ी पर सवार शिकारी।
4. ध्रुवीय भालू महाशय घिर गए हैं कुत्तों के बीच! पर भालू की घुड़की के आगे कुत्ते दुम दबाकर भागते नज़र आते हैं।
5. अज़ीब-सी शक्ल वाले **वालरसों** का झुंड। अपने लंबे दांतों, खाल और मांस के लिए 'शिकार' होते हैं।
6. 5000 से भी अधिक रेंडियरों का झुंड।
7. रेंडियर या कारीबो... अपने बड़े...बड़े सींगों के साथ।
8. पानी में से दूसरी ओर जाते रेंडियरों का झुंड।

(3)

(4)

(1)

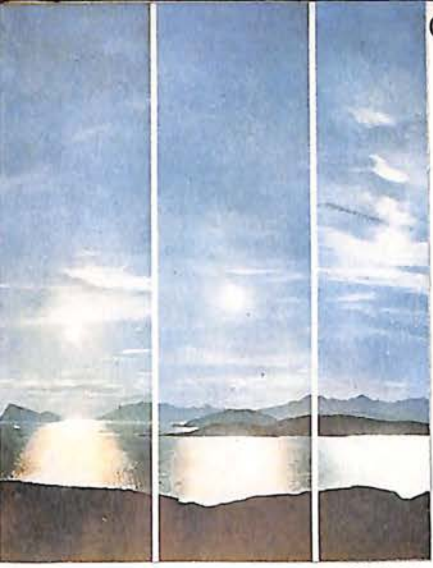

2.27 प्रात:　3.27 प्रात:　4.27 प्रात:

(8)

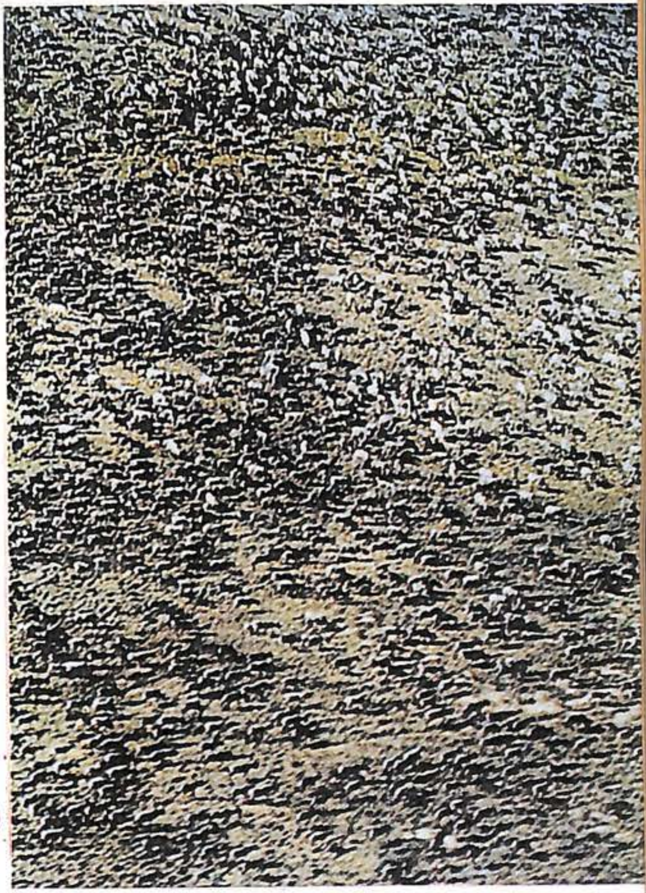

(7)

(6)

(5)

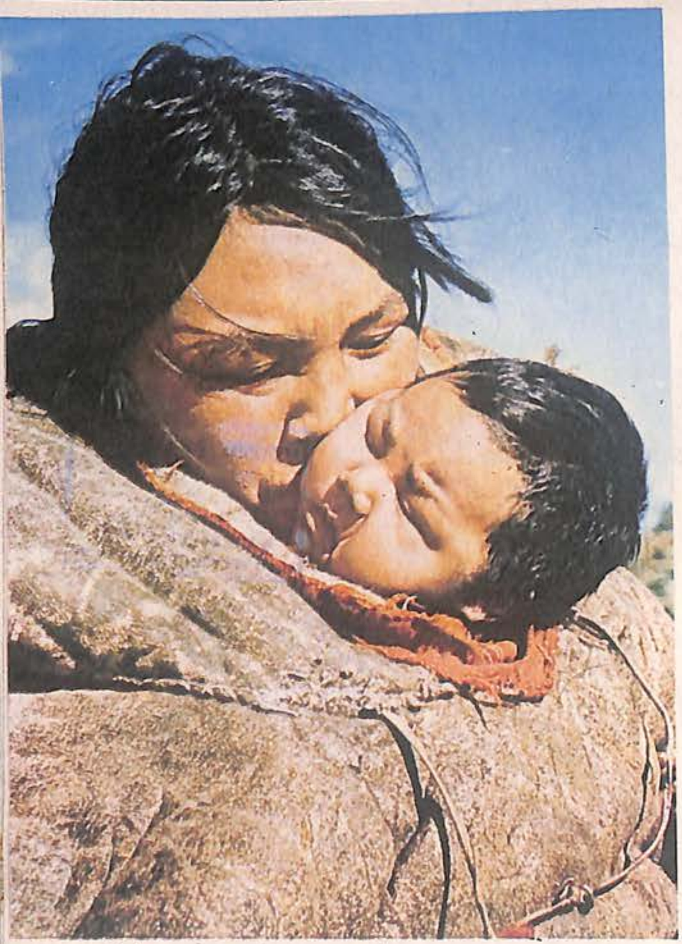

(1)

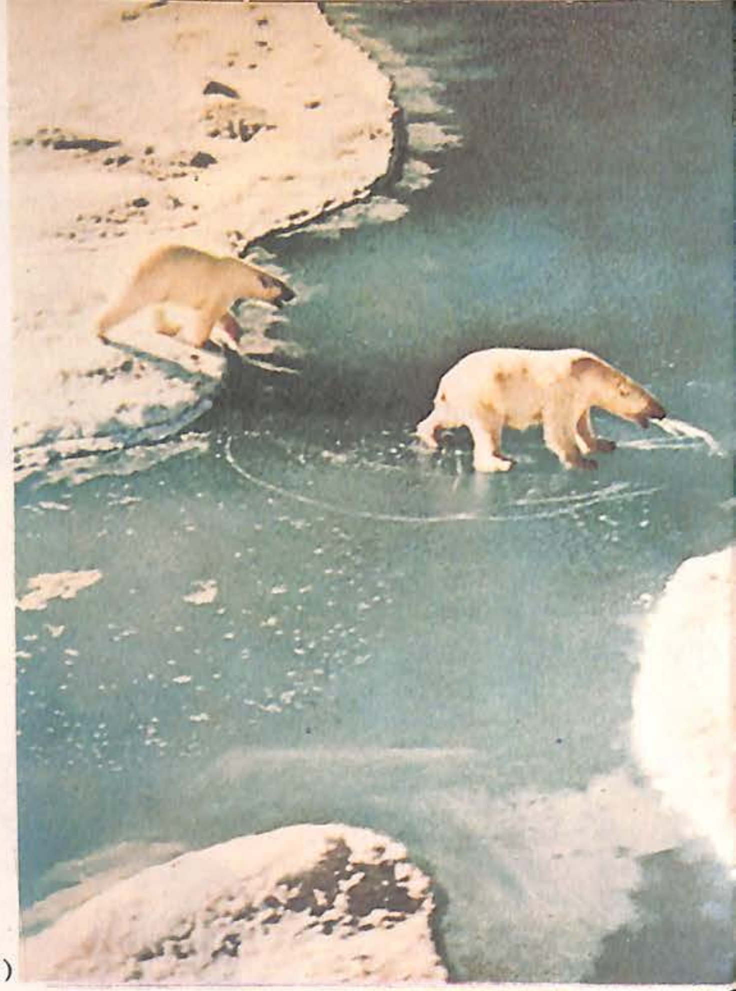

(3)

1. एक **एस्कीमो** शिशु मां की गोद में। पोशाक ध्यान से देखो—**रेंडियर** की खाल से बनी है।
2. पानी में तैरता एक **ध्रुवीय भालू**!
3. बर्फ़ पर चहलक़दमी।
4. दंग कर देने वाली प्रकाश की छटाएं आकाश में।

(4)

(2)

उत्तरी ध्रुव पर मानव का पहला क़दम

अमेरिका का रॉबर्ट पैरी पहला ऐसा मानव बना, जिसने उत्तरी ध्रुव पर पहला क़दम रखा। बीस वर्ष की लगातार कोशिशों के बाद 1908 में उसे यह सफलता मिली। आओ चित्रों के माध्यम से उसके इस अभियान का जायजा लेते हैं।

जाड़ों में उसका निवास अपने जहाज़ 'रुज़वेल्ट' में रहता था। जहाज़ बर्फ़ में धंस गया था। अभियान की सफलता के बाद लौटते समय डायनामाइट लगाकर इसे बर्फ़ से निकाला गया।

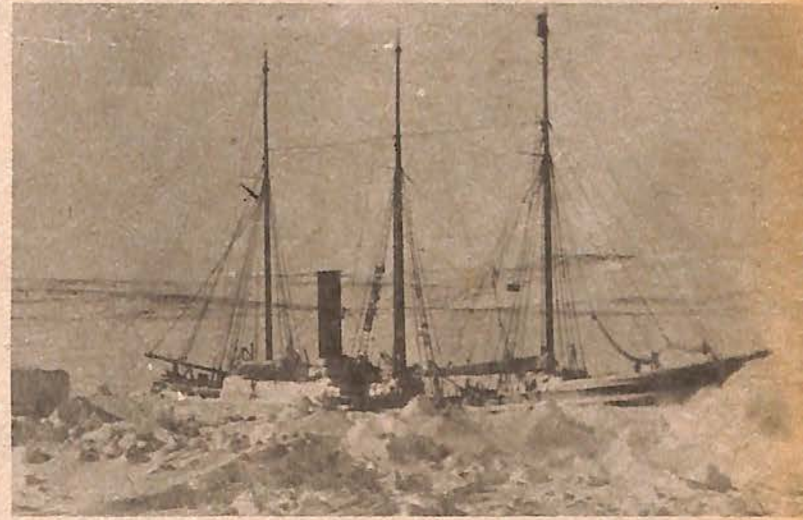

पैदल रास्ते में परिवहन का एक मात्र साधन कुत्ते और उनसे खींची जाने वाली स्लेज़ गाड़ी ही थी।

कुत्तों के लिए गोश्त-दो लंबे दांत वाला नाव्हाल!

और आदमियों का खाना-रेंडियर। और इनकी खाल से कपड़े बनाए जाते हैं।

एक छोटा बच्चा रेंडियर की कच्ची हड्डी से मांस नोचता हुआ। मुंह और कपड़े गंदे होने की परवाह दुनिया के अन्य बच्चों की तरह इसे भी नहीं है।

बर्फ़ के एक पहाड़ पर चढ़ाई...!

बर्फ़ से बने घरों के आसपास फैला सामान और स्लेज़ गाड़ी।

नौका नहीं... न सही! बर्फ़ के एक बड़े टुकड़े पर सवारी!

खोए महाद्वीप की तलाश
अंटार्कटिक व दक्षिणी ध्रुव

उत्तरी ध्रुव पर विभिन्न देशों के झंडे।

नार्वे के राउल्ड अमुंडसन, पहले ऐसे व्यक्ति बने जिन्होंने 1911 में दक्षिणी ध्रुव पर सबसे पहले क़दम रखा।

दक्षिणी ध्रुव पर अमुंडसन व उसका साथी। झंडा नॉर्वे का है।

अमुंडसन के साथ-साथ ही विलायत के स्काॅट की पार्टी भी दक्षिणी ध्रुव पर पहुंचने की कोशिश कर रही थी। दोनों में एक होड़ थी, कौन पहले पहुंचता है। हालांकि दोनों के रास्ते अलग थे।

स्काॅट का ख़्याल था कि कुत्तों की जगह साइबेरिया के खच्चर बेहतर रहेंगे। यहीं वह मार खा गया। खच्चर ठंड सहन न कर सके और एक-एक करके मर गए। उधर अमुंडसन की कुत्ता गाड़ियों ने अपनी मंज़िल पर पहुंचकर ही दम लिया।

खच्चर के मरने पर दल के लोगों को ही गाड़ियां खींचनी पड़ीं।

स्काॅट व साथियों के थके चेहरे उनकी हालत बयान कर रहे हैं।

दक्षिणी ध्रुव पहुंचने पर उन्होंने पाया कि अमुंडसन का दल पहले ही पहुंच चुका था। अमुंडसन ने एक तंबू और स्कॉट के लिए चिट्ठी वहां छोड़ी थी।

स्कॉट और उसके साथी थकान और अन्य कारणों से अपनी जान खो बैठे। स्कॉट को यहां दफ़नाया गया था।

दक्षिणी ध्रुव पर पहुंचने का प्रयास एक अंग्रेज़ इरनेस्ट शेकल्टन ने भी किया था। लेकिन सफलता अमुंडसन के हाथ लगी। फिर शेकल्टन ने अंटार्कटिक को पार करने की ठानी। यह बात है सन् 1916 की।

एंडुरेंस नामक जहाज़ उन्हें लेकर चला। लेकिन कुछ ही समय बाद वह बर्फ़ में धंस गया। शेकल्टन की पार्टी 10 महीने तक, बर्फ़ के चंगुल से जहाज़ के छूटने का इंतज़ार करती रही। इस दौरान वे लोग जहाज़ में ही रहे। लेकिन जहाज़ बर्फ़ के साथ-साथ बहकर लगभग एक हज़ार किलोमीटर दूर अज्ञात दिशा में भटक गया।

अंततः बर्फ़ के दबाव से जहाज़ तहस-नहस हो गया और बर्फ़ में ही जहाज़ की कब्र बन गई।

और फिर दो नावों को बर्फ़ पर लगभग 11 किलोमीटर दूर पानी तक धकाकर ले गए... और फिर सवार हुए नाव में।

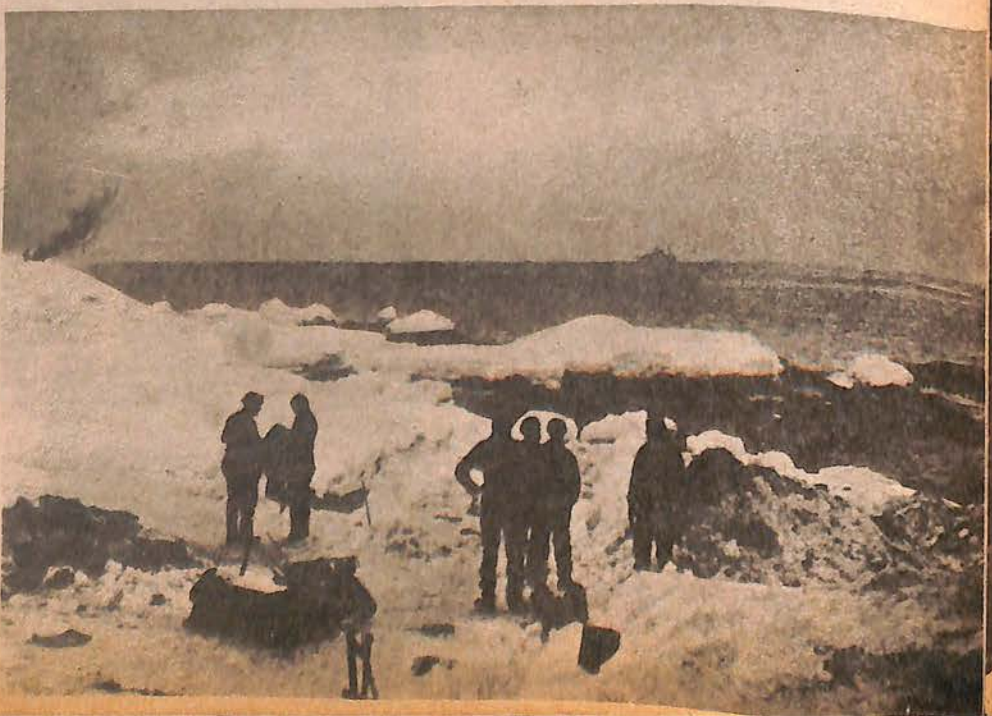

... **आखिरकार** एक जहाज़ ने उनकी जान बचाई।

खेल कागज़ का

क्या तुम चकमक के आकार के एक काग़ज़ के अंदर से निकल सकते हो! आओ हम तुम्हें एक तरीका बताते हैं।

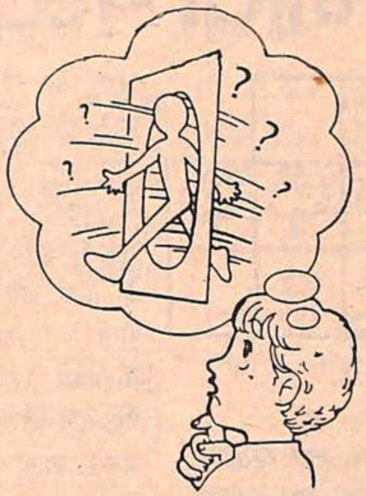

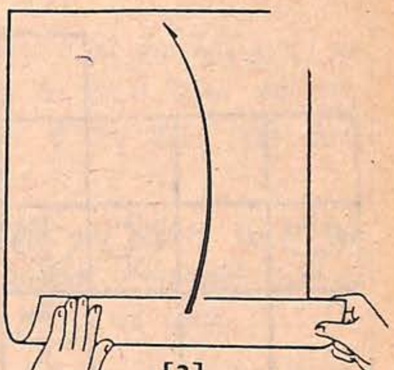

[2]

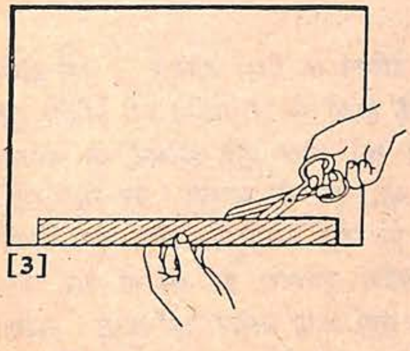

[3]

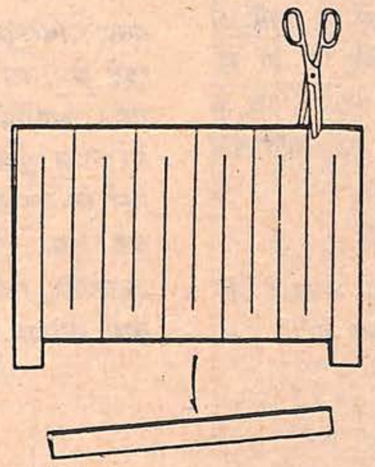

[4]

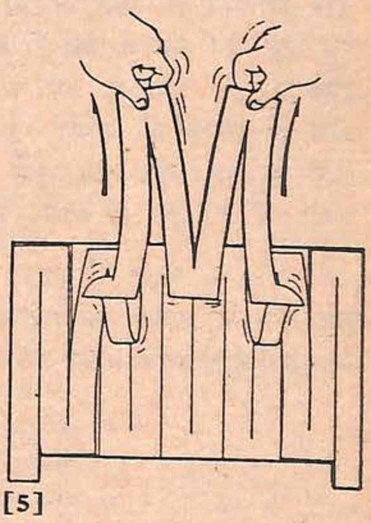

[5]

अख़बार से चकमक के आकार का एक टुकड़ा काटो। उसे **चित्र-2** में दिखाए तरीके से मोड़ लो। **चित्र-3** को देखो। काग़ज़ को जहां से मोड़ा है उस सिरे पर चित्र में दिखाए हिस्से को काटकर निकाल दो! अब **चित्र-4** की तरह उस पर रेखाएं खींचकर, उन पर कट लगाओ। **चित्र-5** देखो, कोई भी छोर पकड़कर ऊपर उठाओ। क्या अब तुम इस काग़ज़ में से निकल सकते हो?

माथापच्ची

(1)

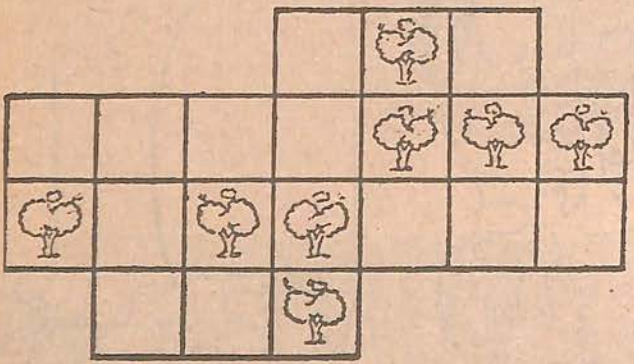

चार दोस्तों ने मिलकर 20 एकड़ का एक खेत खरीदा। खेत के अंदर बिखरा हुआ एक बगीचा भी था। बगीचा कुल मिलाकर 8 एकड़ में था। बगीचे में आम के पेड़ लगे थे। जब बंटवारे की बात आई तो सभी की इच्छा थी कि खेत के चार बराबर हिस्से तो हों ही, साथ ही बगीचे की ज़मीन भी 2-2 एकड़ हरेक के हिस्से में आए। खेत तथा उसमें बगीचे की स्थिति यहां बताई गई है। तुम भी दिमाग़ लगाओ।

(2)

एक वर्ग या आयत की परिमिति तथा क्षेत्रफल का मान बराबर है तो उसकी लंबाई और चौड़ाई क्या होगी?

(3)

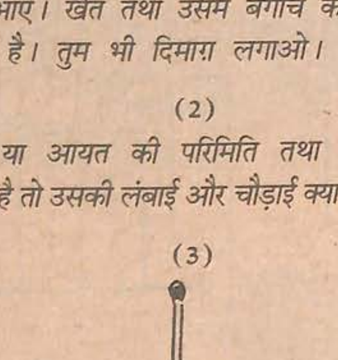

माचिस की तीलियों से बनी इस आकृति को सिर्फ़ तीन तीलियों की जगह बदलकर उल्टा कर सकते हो?

(4)

भैया को नौकरी के लिए अर्जियां भेजनी थीं। उन्होंने छोटे को बुलाकर सौ का एक नोट और एक चिट दी, और कहा कि जाओ चिट पर लिखे अनुसार डाकटिकट ले आओ। छोटे डाकघर पहुंचकर लाइन में खड़ा हो गया। कितने पैसे के कितने टिकट खरीदने हैं यह देखने के लिए जब उसने चिट देखी तो चकरा गया। क्योंकि भैया ने 1 रुपए के, 8 रुपए के और 9 रुपए के कुल मिलाकर 37 टिकट खरीदने को लिखा था। छोटे यह देखकर और मायूस हो गया कि सौ रुपए में से कुछ बचने वाला नहीं है। क्या तुम बता सकते हो उसने कितने रुपए के कितने टिकट खरीदे?

(5)

एक ऑपरेशन टेबिल के पास डॉक्टर व नर्स दोनों खड़े थे। नर्स के हाथों से आयोडीन की शीशी छूट गई। आयोडीन की कुछ बूंदें डॉक्टर के कपड़ों पर तथा कुछ बूंदें नर्स के कपड़ों पर गिर गईं। नर्स के कपड़ों पर जहां आयोडीन गिरा वहां काला पड़ गया, जबकि डॉक्टर के कपड़ों पर जहां आयोडीन गिरा वहां कोई असर नहीं हुआ। इसका क्या कारण हो सकता है?

(6)

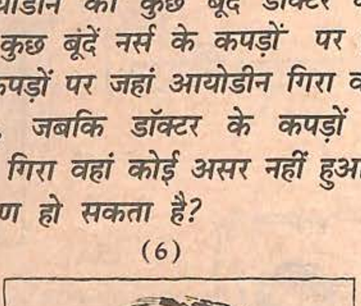

इस चित्र को ध्यान से देखो। यह लकड़ी का एक घन है। जो दो हिस्सों से मिलकर बना है। पर दोनों हिस्सों को कैसे जोड़ा गया होगा! दोनों टुकड़े ठोस लकड़ी के बने हैं!

क्यों... क्यों... 3

मुनिया आज बहुत खुश थी। आख़िर क्यों न हो, उसके मामा-मामी और उनका दो साल का बेटा आ रहा था। मुनिया सुबह से ही रास्ता देख रही थी।

पर मां का मूड उखड़ा-उखड़ा था। उन्होंने मुनिया को कह रखा था, तू अपनी क्यों... क्यों बंद रखियो।

जैसे ही मामा-मामी आए, मुनिया ने लपककर छोटू को कईंयां उठा लिया। छोटू थोड़ी देर तक मुनिया की गोद में रहा। फिर छटपटाकर नीचे उतर गया। **मुनिया ने देखा कि छोटू के एक पैर में छल्ला पड़ा है। मुनिया ने थोड़े ध्यान से देखा, शायद तांबे का है।**

उसने छोटू से पूछा, "ये क्यों डाला है?" छोटू अपनी तोतली बोली में बोला, "मैं बाल-बाल गिल पड़ता हूं न, इसलिए दादी ने डाला।"

बस मुनिया के दिमाग़ में क्यों... क्यों की घंटी बजने लगी। पर मां के डर से कुछ न बोली। **वह सोच रही थी, भला छल्ले से क्या संबंध है छोटू के गिरने का। इससे क्या होता है? और भी ढेर सारे क्यों!**

क्या तुम्हारे दिमाग़ में भी ऐसा कुछ हुआ। तुम बता सकते हो, बच्चों के पैर में छल्ला क्यों डाला जाता है? न पता हो, तो पता करो। अपने दोस्तों, गुरुजी, बुज़ुर्गों से पूछो।

तुम्हारे जवाब **हमें 15 फरवरी 1991 तक मिल जाने चाहिए। लिफ़ाफ़े... पोस्टकार्ड आदि पर 'क्यों... क्यों... 3'** लिखना मत भूलना।

और हां यह भी लिखना कि तुमने कैसे और किससे मालूम किया।

(7)

अंदर जाने का रास्ता खोजो!

(8)

एक मछली मारने वाली नाव समुद्र में खड़ी है। उसके एक तरफ डोरी बंधी हुई सीढ़ी लटक रही है। सीढ़ी का अंतिम छोर पानी को छू भर रहा है। सीढ़ी के दो पायदानों के बीच का अंतर 25 सेंटीमीटर है। समुद्र में पानी 20 सेंटीमीटर प्रति घंटे के हिसाब से बढ़ रहा है, तो पांच घंटे में कितनी सीढ़ियां डूबेंगी?

(9)

11 एक संख्या है। इसमें से 1 को कितनी बार घटाया जा सकता है?

उत्तर : माह अक्टूबर के

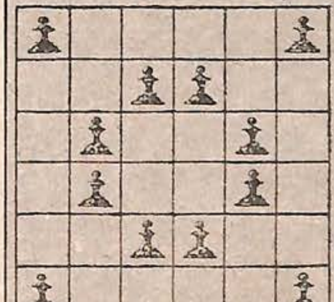

(1)

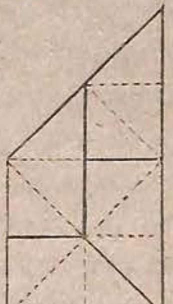

(7)

(2) वह तो तुम खुद ही हो।

(3) अमरूद, चूहा, जून, रवि, घास।

(4) अगर हिसाब लगाओगे तो पता चलेगा कि कुल मिलाकर 60466176 अक्षर बन सकते हैं। 6 करोड़ से अधिक इन अक्षरों को आज़माने में 181398528 सेंकेड (एक अक्षर को आज़माने में 3 सेंकेड लगते हैं तो) लगेंगे। यह 50,000 घंटों से अधिक है। यदि 8 घंटे का एक कार्य दिवस लिया जाए तो इसमें लगभग 6300 कार्यदिवस होंगे, जिन्हें पूरा करने के लिए 20 वर्ष चाहिए। मतलब यह कि 10 कार्य दिवस में तिजोरी खुल जाएगी, इसकी संभावना 6300 में से सिर्फ़ 10 या 630 में से सिर्फ़ एक है।

(6) चकमक को आंखों तक उठाकर लाओ या उसे तिरछा करके देखो - चकमक और एकलव्य लिखा है।

(8) ऐसा दिन 420 वां दिन होगा।

(9) पहाड़ी की ऊंचाई पौने सात किलोमीटर है!

(10) तीन घंटे।

बिल्लू का बस्ता

बिल्लू परिवार के ऐसे सदस्य का नाम है जो हंस दे तो फूल खिल जाएं और रो दे तो क़यामत आ जाए। मन में आ जाए तो ऐसी घनिष्ठता दिखाए कि हृदय खिल उठे और यदि रूठ जाए तो दुनिया भर का आतंक मन में समा जाए, क्योंकि दादा जी से लेकर मीनू तक किसी की मजाल नहीं कि बिल्लू भाई से ऐसा वैसा कह दें। दादा जी को ही देखिए न! ज़रा बिल्लू रूठ गया तो उसके आजू-बाजू खुशामद करते घूमेंगे, बगलों में गुदगुदी करेंगे, तरह-तरह के मज़ेदार चुटकुले सुनाएंगे। उसकी हर शर्त मानने का वादा करेंगे और कहीं झट बिल्लू ने कह दिया कि कंधे पर बिठाकर बाग तक ले चलो तो भले ही लाठी के सहारे डगमगाते हांफते चलेंगे पर बिल्लू को कंधे पर बिठाकर ले जाएंगे ज़रूर..... और तो और उन्हें जब-तब बिल्लू का घोड़ा बने भी देखा जा सकता है।

दादा जी के यहां अपना इतना अधिकार पाकर बिल्लू भाई किससे डरते? हर जगह अपना रौब चलाते हैं। जहां नहीं चलता वहां दादा जी की अंगुली थामकर सिफ़ारिश के लिए पेश कर देते हैं । अब यह तो हो नहीं सकता न घर में, न बाहर कि कोई दादा जी की अवज्ञा करे। और दादा जी चलते हैं बिल्लू मास्टर के इशारों पर। सो भैया, बिल्लू भाई के खूब मौज मज़े। खूब ऊधम मचा लो, जी भर के शरारतें कर लो पर कोई रोक टोक नहीं। भाभी दांत पीसती रह जाती हैं। लाल भैया भी उस पर उंगली उठाने की हिम्मत नहीं रखते क्योंकि उनके पिताजी के पिताजी हैं दादा जी।

जिनकी पूरी शह है बिल्लू को। हां किन्नी (किरण) जो बिल्लू की सबसे छोटी बुआ है, ज़रूर इतना हौसला रखती है, क्योंकि उसका रुतबा भी घर में उतना ही है जितना बिल्लू का।

दादा जी के यहां भी बिल्लू के बाद उसी की पहुंच है और वह बिल्लू के कान खींचने का अधिकार रखती है। पर वह भी अपने अधिकार का प्रयोग नहीं कर पाती। बात यह है कि बिल्लू भाई की सूरत ही कुछ ऐसी है कि ऐन पीटते वक़्त ही उन पर प्यार आ जाता है। खूब गोरा चिट्टा रंग जो अक्सर मैल की परतों में से ही झांकता दिखता है क्योंकि उन्हें नहाने से सख़्त चिढ़ है। धूल भरे बाल और तुड़े-मुड़े से कपड़े तथा अक्सर ढीली हुई नेकर जिसे ऊपर सरकाने में उनका आधे से ज़्यादा समय जाता है। हर समय खूब फूले रहने वाले गाल जो ग़ुस्से में कुछ ज़्यादा ही फूल जाते हैं। निर्दोष-सी बड़ी-बड़ी आंखें जिनमें मासूमियत व शरारत के रंग बड़ी गहराई से झलकते हैं।

भाभी की मजाल नहीं कि उसे नहला सकें। हां अम्मा उसे कितने लालच देंगी, मिन्नतें करेंगी, घर के सभी बच्चों को गंदा घोषित करके बिल्लू को राजा भैया के पद पर प्रतिष्ठित करेंगी, तब बड़ा एहसान जताते राजा भैया नहाएंगे। बीच-बीच में तुनक कर पीछे हट जाएंगे, "आ... मेरे कान में लग गई।... साबुन आंखों में चला गया... तुम तो ठंडे पानी से नहलाती हो मैं तो गरम पानी से नहाऊंगा...।" अम्मा जैसे-तैसे नहला कर, कपड़े पहना कर, तेल-काजल करतीं हैं और हुलस कर कहतीं हैं, "अब लगता है मेरा बिल्लू सचमुच का राजकुमार... इसका ब्याह राजकुमारी से करूंगी...।" तब मां को तिरछी नज़र से देखते, शर्माते बिल्लू भाई मुस्कुराना भी नहीं भूलते।

बिल्लू की इन खुशामदों का एक राज़ और भी है... वो आजकल स्कूल जाने लगे हैं। घर भर में पढ़ लिख जाने की भविष्यवाणी उन्हीं के बारे में की जाती है। रज्जन तो गायें चराने जाता है। पप्पन कुछ ज़्यादा ही बिगड़ गया और स्कूल में किसी बच्चे के सिर पर स्लेट मार कर स्कूल को अलविदा कह आया। घर पर एक मास्टर पढ़ाने तो आते हैं पर बिल्लू की नज़र में यह पढ़ाई कोई पढ़ाई है!

सो भैया! घर बाहर जहां देखो बिल्लू की ही पूछ है। ज़रा स्लेट लेकर बैठे कि सब बच्चों पर वहां खेलने या बोलने की पाबंदी लग जाती है। मीनू का मन तो करता है कि भैया के पास जाकर वह भी उसकी दोस्त बन जाए, पर बिल्लू मास्टर किसी को घास डालें तब न?

पर ये जनाब शुरू से ही ऐसे पढ़ाकू थे? सब जानते हैं कि उन्हें स्कूल भेजने में कितने पापड़ बेलने पड़े थे...!

पहली बार पप्पन भैया के साथ बिल्लू भाई स्कूल गए तो फूले नहीं समाए। स्लेट, बत्ती, रंगीन चित्र आदि बड़े कौतूहल की चीज़ें लगीं। प्रार्थना होने व हाज़िरी भरे जाने तक सब ठीक रहा, पर सबक़ याद न करने वालों के लिए जैसे ही पंडित जी ने डंडा उठाया तो बिल्लू सिर पर पैर रखकर भागे और घर आकर ही दम लिया। फिर ऐसा हंगामा मचाया कि दादा जी को कहना पड़ा, "हां कभी मत जाना स्कूल। ख़बरदार किसी ने उसे स्कूल भेजा। नहीं पढ़ाना ऐसे मास्टरों से... बच्चे का दिल ही बैठ जाए... हम तो पढ़ा लेंगे।"

दो साल तक बिल्लू मास्टर के ख़ूब मौज मज़े रहे। दिन भर खेलना दूध-मलाई खाना और सबकी नाक में दम रखना। गोल मटोल चेहरा सेब की तरह सुर्ख़ हो गया।

तीसरे साल स्कूल में एक 'दीदी' आईं। बड़ी हंसमुख और वात्सल्य से भरी पूरी। नाम था प्रभादेवी। बिल्लू की मां ने झट उन्हें बुलाया, पैर छुए, निवेदन किया, "आप का अहसान जीवन भर नहीं भूलूंगी बहन जी। आप बिल्लू को स्कूल के लिए तैयार कर लें।"

और भी गोपनीय बातें हुईं। प्रभादेवी ने हामी भर ली। पर बात उतनी सरल न थी जितनी वे समझ रहीं थीं। दूसरे दिन चाकलेटों, गुब्बारों, रंगीन चॉक, और चित्रों को लेकर वे घर आईं। भाभी ने उन्हें आदर से बिठाया और उल्लास के साथ बिल्लू को बुलाने भीतर गईं पर वह नहीं मिला। कमरा-कमरा छान मारा, छत, दालान, रसोई, गुसलख़ाना—सब जगह ढूंढा गया पर बिल्लू का पता नहीं। "ताज्जुब है अभी तो यहीं खेल रहा था और अभी कहां हवा हो गया?" उन्होंने झल्ला कर रज्जन को बुलाया, "जा ज़रा बाग में तो चला जा। मुनीर चाचा से बहुत पटती है उसकी। लौटते समय नदी पर देखना... कान पकड़ कर लाना... और सुन देबू के यहां भी देख के आना।"

अम्मा तटस्थ भाव से गेहूं बीनती रहीं। भाभी बड़बड़ाती रहीं, "ऐसा शैतान लड़का ही नहीं देखा, मेरी तो सुनता ही नहीं। दादा जी ने बहुत सर चढ़ा रखा है...!"

रज्जन ने लौटकर बताया कि वह कहीं नहीं है। 'तो ज़रूर मंदिर वाले मैदान में होगा,' भाभी ने सोचा। पर उसी समय मीनू ने आकर बताया कि वह वहीं खेल कर आ रही है भैया वहां नहीं था। और भी ढूंढा गया। खेत, खलिहान, सड़क... पर बिल्लू का नामोनिशान तक न था। अब वास्तव में घबराने की बात थी। आख़िर कहां गया? अभी इतना बड़ा भी नहीं कि कहीं चला जाए और चिंता न हो। अम्मा जो अब तक चुप थीं, उबल पड़ीं, "ग़जब हो रहा है आज के ज़माने में, लड़का अभी होश में भी नहीं कि टरका दो स्कूल... हमारे ज़माने में इतने बड़े बच्चे नंगे फिरते थे... कहीं चला गया तो पढ़ा लेना... सब पड़ें हैं पीछे..।"

हमारे रचनाकार

गिरिजा कुलश्रेष्ठ का नाम चकमक के पाठकों के लिए नया नहीं हैं। चकमक में उनकी पहली रचना कविता के रूप में मई, 87 में प्रकाशित हुई थी। उसके बाद उनकी कहानियां और हाल ही में सांझी पर उनका लेख भी तुमने देखा ही होगा।

गांव में जन्मी, पली व पढ़ी गिरिजा गांव के ही माध्यमिक स्कूल में शिक्षिका हैं। उनकी रुचि सभी कलाओं में है, पर वे अपने को किसी में भी सुयोग्य नहीं मानती हैं। उनके ही शब्दों में, "एक ही बात है जो अच्छी भी है और शायद आवश्यक भी। वह है घोर विसंगतियों व पुनौतियों के बावजूद आगे बढ़ने व बेहतर बनने की अदम्य लालसा।"

उनका पता है—

श्रीमती गिरिजा कुलश्रेष्ठ, उ.श्रे.शि.
मा.वि. तिलौंजरी, मुरैना, म.प्र.

भाभी कुछ शंका से कुछ अम्मा के डर से सहम गईं। प्रभादेवी से बोलीं, "बहन जी आज तो माफ़ी चाहती हूं पर आइंदा उसका ध्यान रखूंगी।"

बाहर धूप के कारण सब भीतर कमरे में जा बैठीं। पहले बिल्लू की और फिर अन्य बच्चों के विषय में बातें होने लगीं। इतने में दीवार के सहारे रखी खटिया के पीछे से एक कंचा गिरा और ढरकता भाभी के पास आया। सबने चौंक कर उधर देखा तो खटिया के नीचे से दो गोरे पैर दिखाई दिए। पास जाकर देखा तो गुमसुम मुंह फुलाए और आंखों में अपराध भाव लिए बिल्लू को खड़ा पाया। भाभी का चेहरा तमतमा उठा। जैसे ही तमाचा मारने को हुईं कि अम्मा ने हंस कर हाथ पकड़ लिया, "तुझे सौगंध है जो बच्चे को मारा... यही कुशल है कि घर में है। मैं तो डर रही थी कि कहीं चला न गया हो।"

भाभी के मन में एक गुबार उठा पर वहीं समा गया। और बिल्लू इसका लाभ उठाकर भाग गया।

प्रभा देवी को ऐसा चकमा एक बार नहीं कई बार दिया। तब उन्होंने शिक्षिका के रूप में नहीं घर की एक सदस्या के रूप में आना शुरू किया। घर में उनका मान और भी बढ़ गया। वे दिन-रात, शाम जब चाहे चली आतीं और मज़ेदार कहानियों द्वारा बच्चों का मन जीतती रहतीं। सब बच्चों के बाद बिल्लू ने दोस्ती का हाथ बढ़ाया वह भी इस शर्त पर कि वह स्कूल नहीं जाएगा।

"क्यों भई? अच्छा बताओ स्कूल से इतना क्यों डरते हो?"

"वहां पिटाई होती है!"

"वाह पिटाई तो पुलिस करती है, हम क्या पुलिस हैं? वह भी बिल्लू जैसे प्यारे बच्चों की पिटाई?"

"लेकिन मैं कुछ लिखना तो जानता नहीं!"

इसके उत्तर में प्रभा देवी ने बिल्लू की पीठ थपथपाई, भरोसा दिया कि वे खुद सिखाएंगी। तो इस तरह बिल्लू के स्कूली जीवन की शुरूआत हुई। पर रहते आज भी अपनी मौज में। जब तक मन लगता है, तभी तक रुकते हैं, वरना 'पानी' या 'पेशाब' के बहाने छुट्टी ले लेते हैं, फिर उड़ते हैं आज़ाद पंछी की तरह।

कक्षा में वह कभी शांत नहीं बैठता। हर समय

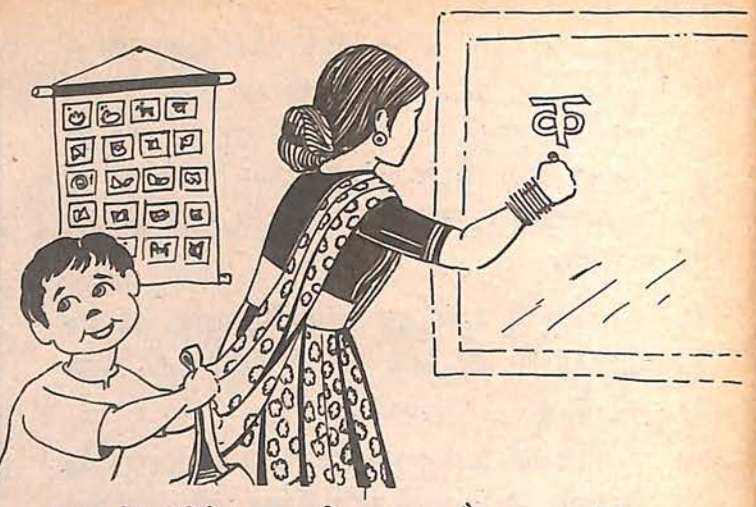

शिकायतें, "दीदी वह हमारी जगह पर बैठ गया... दीदी उसने मेरी बत्ती ले ली... दीदी वह हमारे पापा का नाम लेता है... दीदी वहां लड़ाई हो रही है... वे पढ़ नहीं रहे बात कर रहे हैं।"

दीदी को हर समय की इन शिकायतों पर गुस्सा तो बहुत आता पर क्या करें ज़रा सी रूखाई पर ही वह साफ़ स्कूल छोड़ जाएगा। प्रभा देवी नहीं चाहतीं कि वह स्कूल छोड़े। इसलिए वह भले ही बात सुनाने के लिए कंधे तक झिंझोड़ डालता, पर वे हां हूं ही करती रहतीं।

बात केवल इतनी ही नहीं थी। बिल्लू की शरारतें अनंत थीं। राष्ट्र-गीत के बीच में चुपचाप से सीटी बजा देना, बीच कक्षा में मेढ़क व चूहे छोड़ देना, दो लड़कियों की चोटियां आपस में बांध देना, चिरचिटा लगा देना, दीदी के लटकते पल्लू से कोई बस्ता बांध देना और चाहे जब छुट्टी की घंटी बजा देना ये सब उसके सहज काम थे। प्रभा देवी बौखला उठतीं, लड़का है कि आफ़त? और अंदर ही अंदर भुनभुनाकर रह जातीं, क्योंकि डांटने या मारने की कसम तो बिल्लू ने स्कूल आने से पहले ले रखी थी। प्यार से ही समझातीं। फिर भी लिखते या पढ़ते समय, बत्ती न होने की, पेन में स्याही न होने की, घर पर कॉपी भूल आने की या प्यास लगने की बात ज़रूर कहता और घर आ जाता, फिर कोई पहुंचा तो ले स्कूल। बिल्लू भाई किसी के गुलाम नहीं। जब मन होगा स्कूल जाएंगे, पढ़ेंगे और जब मन होगा घर रहेंगे, खेलेंगे।

खैर यह सब तो चल ही रहा है। जब बिल्लू भाई स्कूल जाने लगे तो पढ़ेंगे भी। पर बात तो बिल्लू के बस्ते की थी! बिल्लू का बस्ता आजकल इतना रहस्यमय हो गया है कि सब का चैन छीन रखा है

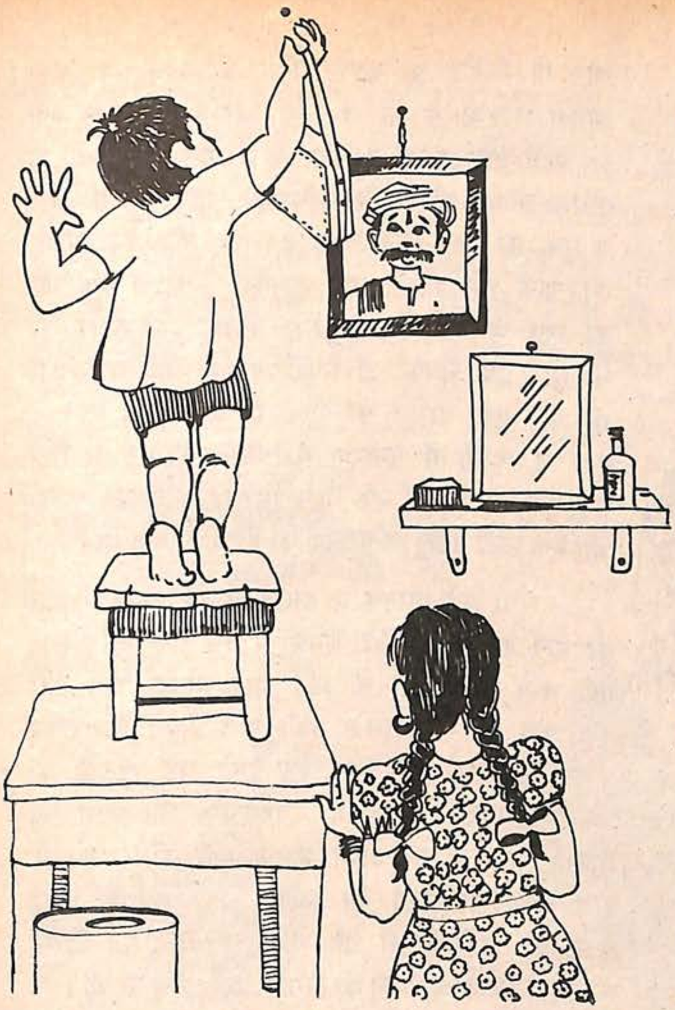

उसने। रज्जन को देखो तो, पप्पन को देखो तो और मीनू। और तो और किन्नी भी बिल्लू के बस्ते के पीछे पड़ी है। आख़िर क्या है उस बस्ते में जो बिल्लू भाई भी उसकी इतनी हिफ़ाज़त करते हैं? स्कूल से आते ही सीधे कमरे में एक मेज़ खींचकर उस पर स्टूल जमा कर सबसे ऊंची खूंटी पर विराजे जाते हैं 'बस्ता महाराज'। फिर फ़ौरन ही मेज़, स्टूल हटा भी दिए जाते हैं। क्या पता रज्जन, पप्पन जैसे अनपढ़ गंवार लड़कों के हाथ ही पड़ जाए। मीनू के हाथों तो वह एक बार किताबों की दुर्गति करवा चुका है। मां पर गुस्सा उतरा, "फड़वा डालीं सब किताबें? अब तुम जाना स्कूल मैं नहीं जाऊंगा।"

मैं स्कूल नहीं जाऊंगा, यह अल्टिमेटम सबको डराने के लिए पर्याप्त है। क्या भाभी और क्या भैया, क्या दादा जी और क्या अम्मा सभी उसका रुख़ रखते हैं। जैसे तैसे तो लड़का स्कूल जाना सीखा है कहीं फिर मुकर गया तो? बच्चों पर यह धमकी ऊपर से ही कारगर थी। उनके मन में तो यह बात अक्सर करवट लेती, करवट क्या लेती उछल कूद मचाती कि कब मौक़ा मिले और बिल्लू का बस्ता देख डालें।

वैसे उनकी इतनी जिज्ञासा अनुचित भी न थी। मनुष्य का स्वभाव ही है 'निषेध' की ओर आकर्षित होना विशेषकर बच्चों का। किसी बच्चे से कहेंगे 'वहां मत जाओ' तो वहां जाने का मन तो ज़रूर होगा। किसी वस्तु को जितना हम छुपाएंगे चाहे वह बेकार क्यों न हो उसके लिए औरों के मन में प्रबल आकर्षण होगा। घूंघट किए नई बहू का मुंह देखने के लिए कितना उत्साह व खिंचाव होता है।

बिल्लू भाई यदि इतनी सुरक्षा न करते तो शायद बच्चे भी उधर आकर्षित न होते पर उसकी खुली घोषणा ने, 'कि मेरे बस्ते को कोई नहीं छुएगा'। उनके मन में अधिक जिज्ञासा पैदा कर दी और एक दिन उस 'इच्छा' को कार्य रूप में बदल ही डाला। बात यह थी कि मां, अम्मा सभी दोपहर में आराम कर रहीं थीं, बिल्लू किन्नी व दादा जी के साथ खेत पर गया था। रज्जन ने ऊंची खटिया पर खड़े होकर मीनू को कंधे पर बिठाया और बस्ता उतरवा लिया। तीनों खुश-खुश दरवाज़े की ओर मुड़े ही थे कि मीनू की घिग्घी बंध गई। सामने 'ही मेन' की मुद्रा में बिल्लू भाई खड़े थे। मीनू इसी बात पर दो-एक बार अपनी चोटियां खिंचवा चुकी थी। रिरिया कर बोलीं, "बिल्लू भैया मुझसे तो रज्जन ने कहा था!"

"हूं... रज्जन ने कहा था...आज सब की ख़बर लिवानी है मुझे...!"

यह कह कर बिल्लू तेज़ी से ऊपर गया और रज़ाई ओढ़ कर सो गया। मां मनाने गईं तो रज़ाई को चारों ओर दबाकर बोला, "मुझे खाना नहीं खाना... न स्कूल जाना है... रज्जन, पप्पन ने मेरा बस्ता क्यों छुआ?"

दादा जी ने सुना तो हंस कर बोले, "अरे बेटा कोई बस्ता छू लें या देख लें तो क्या बनता बिगड़ता है! वे 'मूर्ख' भी पढ़ना सीखेंगे। क्या बिगड़ता है दिखाने में?"

"हां क्या बिगड़ता है दिखाने में? आपने तो कह दिया क्या बिगड़ता है, मैं जानता हूं क्या बिगड़ता है!"

"हां बता क्या बिगड़ता है?" दादा जी ने और भी मुस्कुराकर पूछा।

"नहीं बताता... नहीं बताना है मुझे कुछ... नहीं जाना मुझे स्कूल।" और बिल्लू रोने लगा।

दादा जी को आदेश देना पड़ा, "हां भाई बिल्लू का बस्ता कोई नहीं छुएगा समझे... नहीं तो उसी का दूध-मक्खन बंद और खेत पर मज़दूरी शुरू..!"

सो भैया बच्चों के हौसले पस्त... पर ज़रा ध्यान देना... सिर्फ़ दिखाने के लिए सब चुप थे वरना अब तो ऊंचे स्तर पर बस्ता देख डालने की योजनाएं बनने लगीं। अब की बार योजना में किन्नी को मिलाया गया। किन्नी ने समर्थन दिया, "ज़रूर मौक़ा पाकर देखेंगे सचमुच इतना गोल मटोल बस्ता सिर्फ़ किताबों से भरा नहीं हो सकता।"

और वह मौक़ा जल्दी आ गया। बिल्लू भाई पापा के साथ जूते पहनने चले गए। रज्जन को आगे के द्वार पर, पप्पन को पीछे के द्वार पर और मीनू को छत पर तैनात किया। किन्नी ने डरते कांपते बस्ते को उतारा। चोरी तो चोरी होती है चाहे वह सोने की हो या कोड़ी की। चोरी करने पर हृदय तो कांपता ही है। किन्नी ने भीतर की कुंडी लगाकर आने का आदेश देते हुए रज्जन, पप्पन को पुकारा, मीनू भी नीचे आई। सबने धड़कते हृदय से बस्ते का सामान बाहर निकाला। सबकी आंखें हैरत व कौतूहल से फैल गईं, मानों कोई सिम-सिम का ख़जाना हो। हर चीज़ को उलटते-पुलटते रहे।

प्यारे दोस्तों तुम भी जानना चाहोगे कि बिल्लू के बस्ते में क्या था जिसके पीछे सब पागल बने थे। तो सुनो, बस्ते में हरे, पीले, लाल व नीले रंग के बीस कंचे थे। पांच माचिस की ख़ाली डिब्बियां, जिनमें तीन बत्ती के टुकड़ों से व दो चॉक के टुकड़ों से भरी थीं। दो सिगरेट के ख़ाली पैकेट जो कार्बन व स्याही सोख़्ता काग़ज़ों से भरे थे। एक बड़े से डिब्बे में नदी से बटोरे गए शंख व सीप थे। आठ-दस नदी के दूधिया कंकड़ भी थे, जिन्हें घिसकर चंदन लगाया जाता व पूजा का खेल खेला जाता है। एक स्पंज का टुकड़ा, एक पानी भरी शीशी, एक नीलकंठ का व एक मोर का पंख था। छोटा सा टुकड़ा 'विद्या' (भोजपत्र) का भी था। एक चुंबक, दो सेफ्टीपिन एक पन्नी व परकार भी थी। एक काग़ज़ की थैली में काग़ज़ की नावें व फूल थे, दूसरी में रामायण, महाभारत सीरियल के चित्र थे। एक हरे रंग व एक पीले रंग का कांच का टुकड़ा और एक छोटी तराज़ू जो पालिश की डिब्बी से बनी थी।

सभी बड़े विस्मय व हसरत से इस अमूल्य भंडार को देख रहे थे। उनकी समझ में आ गया कि बिल्लू क्यों बस्ते की सुरक्षा के प्रति इतना सर्तक था। और क्यों गांव के बच्चे उसके आगे पीछे फिरते हैं। रज्जन, पप्पन को ईर्ष्या होने लगी कि इतने बड़े ख़ज़ाने का मालिक अकेला बिल्लू है। वह गांव के बच्चों को खिला सकता है पर अपने भाइयों को नहीं। रज्जन के हाथ कुछ पार करने को ललचा रहे थे। पर किन्नी बुआ की उपस्थिति में यह संभव न था। यह बिल्लू की पूरी वफ़ादार थी। मीनू की निगाहें छोटी तराज़ू पर थीं।

"अच्छा बच्चों देख चुके बिल्लू का बस्ता?"

किन्नी ने बुर्जुआ अंदाज़ में कहा।

"ठहरो बुआ जी थोड़ी देर और देखेंगे।"

तीनों एक साथ बोले। पर इतने में बाहर से कुंडी खटखटाने की आवाज़ आई। सबके कान खड़े हुए, दिल धड़क उठा।

'जरूर बिल्लू आ गया।'

किन्नी ने सब सामान ज़ल्दी भरा व जैसा का तैसा ऊपर टांग दिया। हालांकि उतरते समय वो गिर पड़ी व घुटना छिल गया, पर सारी पीड़ा को भूल कर बोली, "ठहरो! मैं कुंडी खोलूं इससे पहले तुम लोग अटारी पर जाकर भाभी के पास लेट जाओ और ख़बरदार आज की यह बात कभी उसे बताना नहीं, वरना मेरा तो क्या बिगड़ेगा तुम्हारी आफ़त होगी।"

और भैया किन्नी अपने चोर मन को सम्हाले कुंडी खोलने चल पड़ी।

□ गिरिजा कुलश्रेष्ठ

दर्पण के संग खेलो

एक छोटा दर्पण या उसका टुकड़ा लो और मास्टर चित्र के पास रखकर उसका प्रतिबिंब देखो। प्रतिबिंब और मास्टर चित्र को मिलाकर एक नया चित्र बनता है। यहां दिए अन्य चित्र ऐसे ही बने हैं। दर्पण को थोड़ा आगे-पीछे खिसकाकर, तिरछा करके रखो और तुम भी बनाने की कोशिश करो।

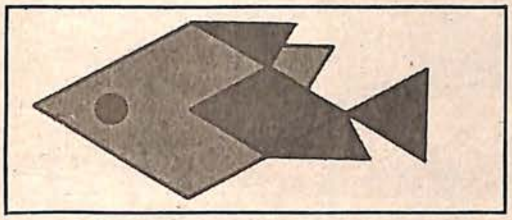

मास्टर चित्र

1

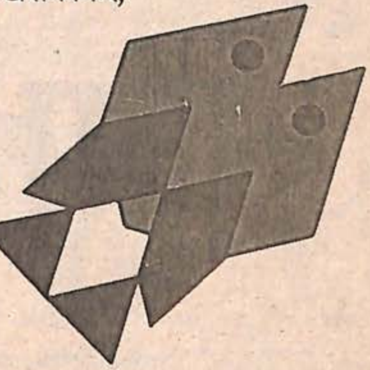

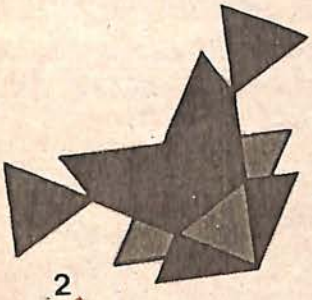

2

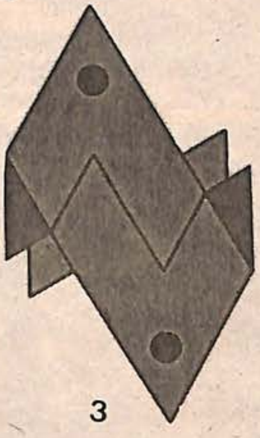

3

4

5

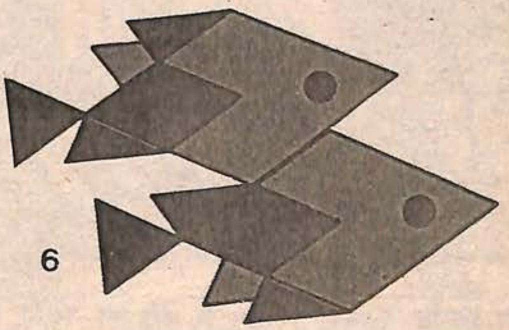

6

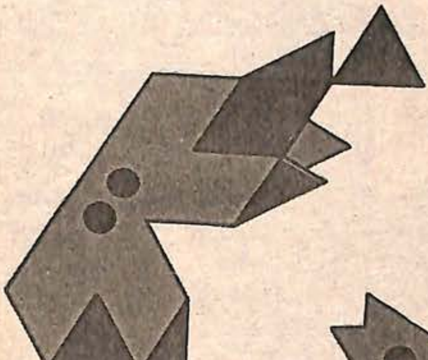

7

8

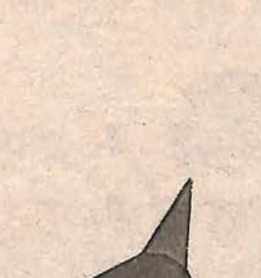

9

10

कौन गधा!

चित्रकथा : शिवेंद्र पाडिया

एक किसान के पास एक बैल और एक गधा था। किसान दोनों की देखभाल अच्छी तरह करता था।

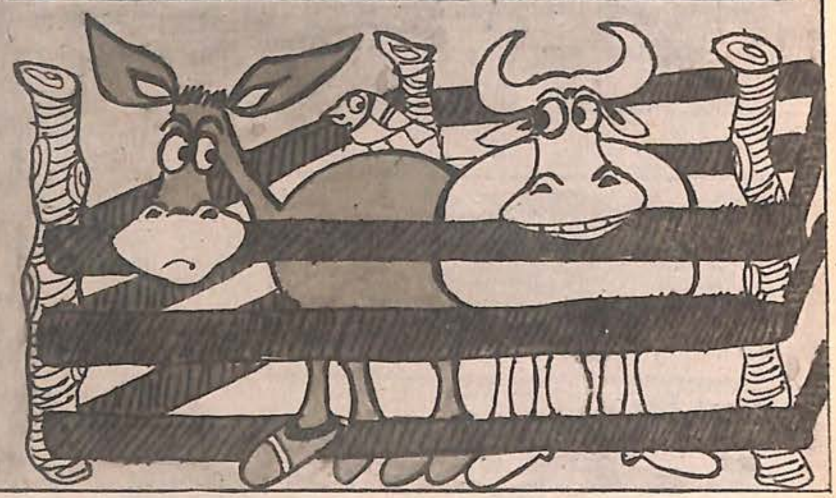

एक दिन बैल ने सोचा, ये गधा कुछ काम धाम करता नहीं, बस आराम करता है, इसे काम पर लगाना चाहिए। बैल ने बीमार होने का ढोंग किया।

बैल को बीमार देखकर, किसान ने गधे को अपनी गाड़ी में जोत दिया। रास्ते में खरगोश ने गधे को परेशान देखा।

गधा, खरगोश का मित्र था। खरगोश ने सोचा ज़रूर बैल ने कुछ गड़बड़ की है। कुछ करना चाहिए।
सुनो!
खरगोश ने गधे को एक तरकीब बताई।
बैल भाई, मैंने सुना है, तुम बीमार रहते हो तो मालिक तुम्हें कसाई को बेचने की सोच रहा है।
बैल यह सुनकर परेशान हो उठा।
वाह दोस्त! तुम्हारी तरकीब काम कर गई!
दूसरे दिन ही बैल ने बीमारी का ढोंग छोड़ दिया और फिर काम पर लग गया।

भूगर्भ की यात्रा

अब तक तुमने पढ़ा

प्रोफ़ेसर अपने एक सहायक और पथ प्रदर्शक के साथ भूगर्भ की यात्रा पर हैं। अपनी यात्रा के दौरान वे एक अजीब-सी गुफा में थे। फिर एक बेड़े पर सवार हुए। बेड़ा पथराई हुई लकड़ी से बनाया गया था। वे समुद्र में चले ही जा रहे थे। समुद्र समाप्त ही नहीं हो रहा था। फिर उन्हें दो विशाल जलचर दिखाई दिए। चलते-चलते वे एक द्वीप पर पहुंचे, जहां, पानी फौव्वारे के रूप में फूट रहा था। संभवतः वहां नीचे एक ज्वालामुखी था। प्रोफ़ेसर ने ज्वालामुखी द्वीप का नामकरण अपने सहायक के नाम पर कर दिया। अब आगे पढ़ो...

हरे-भूरे रंग के बादल छाते जा रहे थे। अंधेरा भी बढ़ता जा रहा था। बीच-बीच से बिजली की चमक और बादलों की ग़रज़ भी सुनाई दे जाती थी।

"मौसम ख़राब होता जा रहा है," मैं बोला।

प्रोफ़ेसर ने कोई उत्तर न दिया। वे हर समय कुछ चिढ़े-चिढ़े से मालूम होते थे। समुद्र की चौड़ाई मानो बढ़ती सी जाती थी। इस बात से उन्हें बड़ी झुंझलाहट थी।

"शायद तूफ़ान आने वाला है", मैं बोला, "चारों ओर बादल घिर रहे हैं।"

हवा अब रुक गई थी। हमारा बेड़ा भी आगे न बढ़ रहा था।

"हम अब थोड़ी देर रुक जाना चाहिए। इस समय ऐसा ही करना ठीक रहेगा।"

"नहीं।" चाचा जी गुस्से में भरकर बोले "कदापि नहीं। मुझे तट पर की चट्टानें देखनी हैं। बेड़ा चाहे रहे चाहे चूर-चूर हो जाय, कोई परवाह नहीं मुझे। अचानक हवा चलने लगी और पानी भी बरसने लगा। हवा का शोर भयावना होता जा रहा था, अंधेरा भी बढ़ता ही जा रहा था। तभी अचानक बेड़ा ऊपर की तरफ उछला और चाचा जी पानी में जा गिरे। गनीमत रही कि एक रस्सी उनकी पकड़ में आ गई और वे ऊपर चढ़ आए। पानी झरने की तरह बरस रहा था। तूफान ग़रज़ रहा था। बादल भी लगातार गरज़ रहे थे।

हम कहां जा रहे थे?

रात भयानक हो रही थी। तूफान भी पूरे ज़ोर पर था।

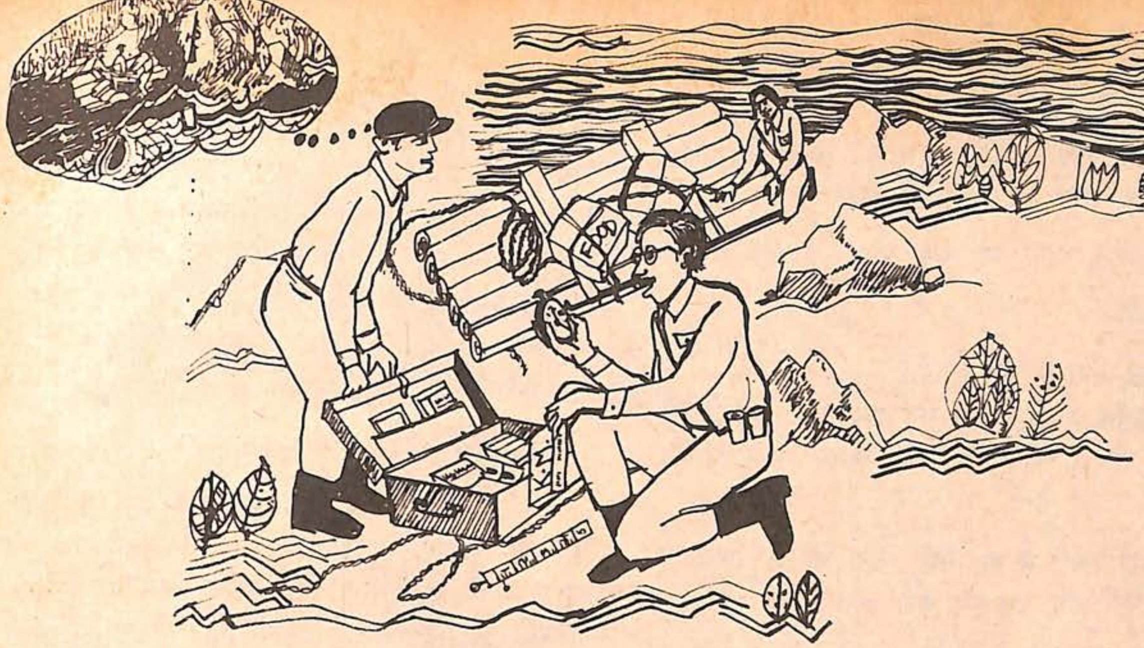

सोमवार 24 अगस्त। वैसे ही ज़ोर-शोर से चल रहा था। लगता था कि कभी रुकेगा ही नहीं। हमें आराम की कितनी आवश्यकता थी। हम दक्षिणी-पूर्व दिशा में अपने नाम वाले द्वीप से भी 600 मील आगे बढ़ आए थे। तीन दिन तक हम आपस में एक शब्द भी न बोले। बोलते भी तो वह तूफ़ान के उस शोर में सुन कौन पाता? तभी बेड़े के एक सिरे पर आग का एक गोला-सा दिखाई पड़ा। इसका रंग कुछ नीलापन लिए हुए सफ़ेद-सा था। वह बेड़े पर इधर-उधर लुढ़क रहा था। उसके लुढ़कने की गति बढ़ती जा रही थी। एक बार तो वह उस संदूक से भी छू गया जिसमें बारूद रक्खी थी। क्या हमारे चिथड़े तक उड़ जाएंगे? नहीं, वह हटकर अब हैंस के पास आया जो कि उसे बड़ी शांति से देख रहा था। फिर वह मेरे पास आने लगा। मैंने अपने पैर सिकोड़ने चाहे लेकिन ऐसा कर न सका। हवा में एक विचित्र-सी गंध फैल गई जिससे हमें सांस लेने में परेशानी होने लगी। मैं अपने पैर क्यों नहीं खींच पा रहा था? इसका कारण मेरी समझ में आ गया। बात यह थी कि उस विद्युतीय गोले के कारण हमारी लोहे की सारी चीज़ें—पानी, औज़ार, बंदूकें इत्यादि चुंबकीय हो गई थीं। मेरे जूतों में भी लोहे का टुकड़ा लगा था जिसके कारण ही मेरा पैर बेड़े से जैसे चिपक-सा गया था। बड़े प्रयत्न के बाद मैं अपने पैर हटा पाया। उसी समय वह गोला फूट पड़ा और बड़ी भयानक तेज़ रोशनी हुई। हम चारों ओर से आग से घिर गए। फिर अंधकार छा गया।

मंगलवार 25 अगस्त। कई घंटों तक मैं बेहोश रहा। क्या हम अब भी समुद्र पर हैं? हां। हम बड़ी तेज़ी से इंग्लैंड, फ्रांस, शायद पूरे योरोप के नीचे से गुज़र चुके थे। अब हमने एक नया शोर सुना। लगता था कि लहरें चट्टानों से टकरा रही हों। वर्षा अब भी हो रही थी। अब हम समुद्र के किनारे पहुंच चुके थे। कैसे? बात यह हुई थी कि हमारा बेड़ा एक चट्टान से जा टकराया था। हैंस की होशियारी से हम अपने सामान के साथ किनारे पर उतर आए थे। हैंस ने हमारे लिए कुछ खाना तैयार किया लेकिन कुछ भी खाया न गया। हम तीन दिन के थके थे। तुरंत ही नींद ने आ घेरा।

दूसरे दिन जब हम जगे तब तूफ़ान थम चुका था। बड़ा सुहावना मौसम था। सागर और आकाश दोनों ही शांत।

"मेरे बच्चे," प्रोफ़ेसर बोले "मैं आशा करता हूं कि तुम अच्छी तरह से सोए होगे।" वे इस ढंग से बोले जैसे हम अपने घर में ही बैठे हों। ओह! तूफ़ान ने हमें पूर्व की तरफ पहुंचा दिया। इस समय हम जर्मनी के नीचे थे। हमारा प्यारा हैम्बर्ग हमसे सिर्फ़ 120 मील की ऊंचाई पर था। लेकिन ये 120 मील ऊपर तक एक ठोस चट्टान की मोटाई के रूप में थे।

चाचा जी के प्रश्न का उत्तर देने से पूर्व मेरे मस्तिष्क में उपर्युक्त विचार घूम गए।

"मैं पूछ रहा हूं। चाचा जी एक बार फिर बोले, "तुम्हें रात में नींद ठीक से आई या नहीं।"

"मैं बड़ी अच्छी तरह सोया रात भर ," मैं

बोला, "आज आप बड़े खुश दिखाई दे रहे हैं, चाचा जी।"

"हां, आज मैं बहुत खुश हूं। जानते हो, क्यों? इस भयानक समुद्र यात्रा से हमें छुट्टी मिली।"

"लेकिन चाचा जी, एक बात पूछूं आपसे?"

"पूछो।"

"हम वापस कैसे लौटेंगे?"

"वापस लौटेंगे! क्या तुम इसी समय लौटने की बात कर रहे हो जब कि यात्रा क़रीब-क़रीब समाप्त होने पर आ गई है!"

"नहीं नहीं, मैं तो सिर्फ़ इतना जानना चाहता हूं कि यात्रा पूरी होने पर हम कैसे लौटेंगे?"

"इससे अधिक आसान इस दुनिया में क्या होगा। हमें एक बार पृथ्वी के बीचों-बीच तक पहुंचने भर दो। ऊपर जाने के लिए कोई न कोई रास्ता हम अवश्य ढूंढ लेंगे।" चाचा जी ने उत्तर दिया।

"लेकिन हमारे पास इतनी लंबी यात्रा करने के लिए पर्याप्त भोजन भी है?"

"क्यों नहीं" चाचा जी बोले "हैंस ने सारी चीज़ें सुरक्षित ढंग से रक्खी हैं। फिर भी हमें देख लेना चाहिए।"

मेरा भय निर्मूल ही सिद्ध हुआ। सारा सामान ठीक हालत में था। हां, हमारी बंदूकें अवश्य खो गई थीं चट्टान की उस टक्कर के कारण। शायद पानी में गिर गई होंगी। चाचा जी बोले, "बंदूकें गईं तो गईं उनके बिना भी हम काम चला लेंगे। यही क्या कम है कि बैरोमीटर बच गया है। यह बड़े काम की चीज़ है हमारे लिए। इससे हम ठीक-ठीक गहराई जान सकेंगे। बैरोमीटर, क्रोन्तेमीटर, थर्मामीटर, कंपास बक्स सभी तो बच गए हैं। फिर हमें परवाह किसकी?"

"और खाना," मैंने पूछा।

"खाना भी देख लो। 4 महीने तक बड़े मज़े से चल जाएगा। इतने से तो बहुत कुछ बच भी जाएगा। जितना भी बचेगा उससे विश्वविद्यालय के प्रोफ़ेसरों को एक शानदार दावत दूंगा।" चाचा जी बोले "हमें अपनी पानी की बोतलें फिर से भर लेनी चाहिए। हमारा बेड़ा भी कुछ टूट-फूट गया है। मैं हैंस से उसकी मरम्मत कर डालने का अनुरोध करूंगा। यद्यपि इसका दुबारा उपयोग करने की आवश्यकता पड़ने की आशा बिल्कुल नहीं है।"

(अगले अंक में जारी)

जूलेवर्न के उपन्यास '*ए जर्नी इन टू दी सेंटर ऑफ अर्थ*.' का अनुवाद। अनुवादक : प्रभात किशोर मिश्र। सौजन्य : इंडियन प्रेस, इलाहाबाद। सभी चित्र : शोभा घारे।

प्रभाकांत भारद्वाज,
पांचवीं, बालोद

ऋचा, आठ वर्ष, भोपाल

पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अंतर्गत भारत के समाचार पत्रों के रजिस्टार द्वारा पंजीकृत।
डाक पंजीयन क्रमांक BPL/DN/MP/431/90

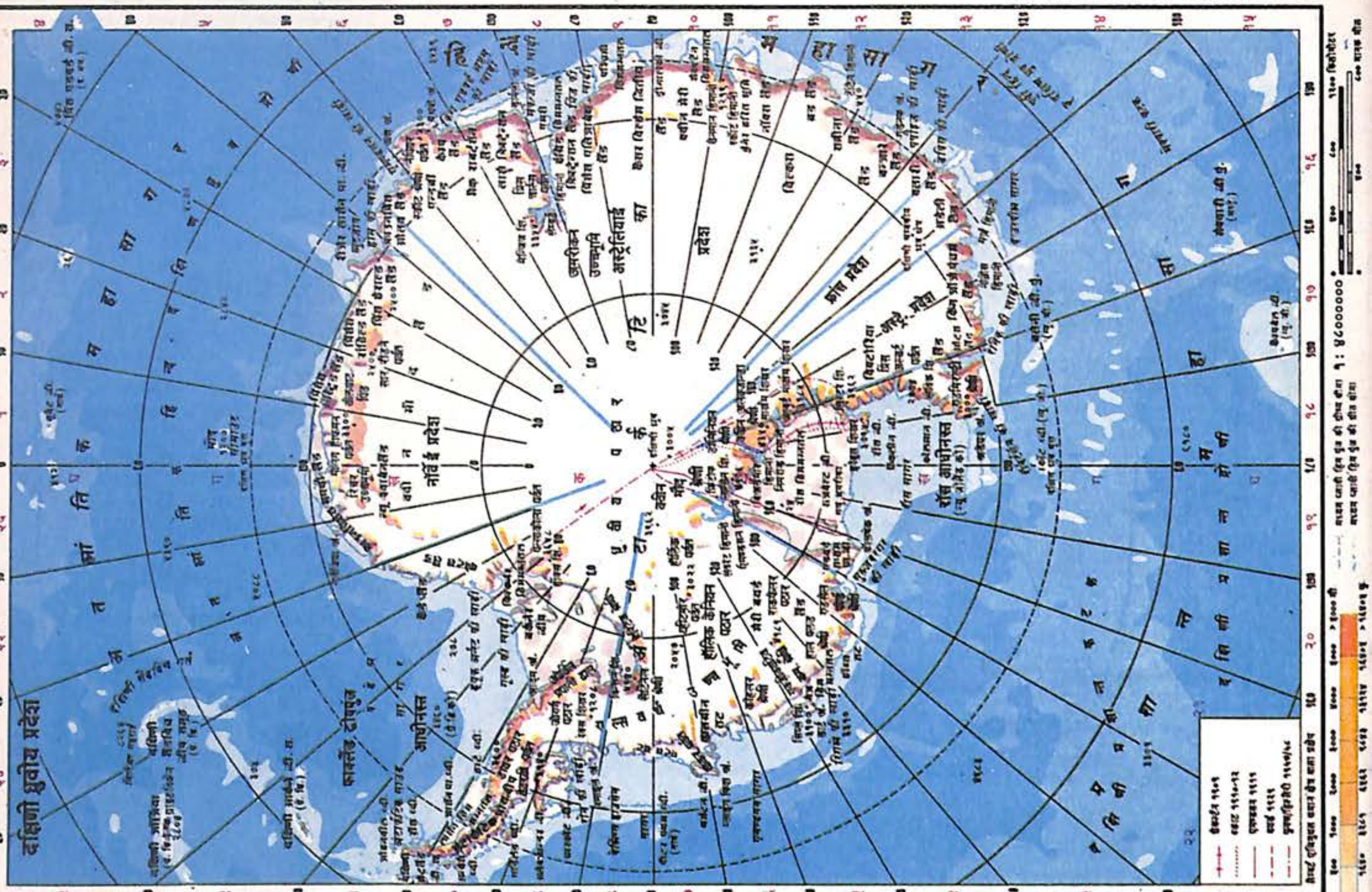

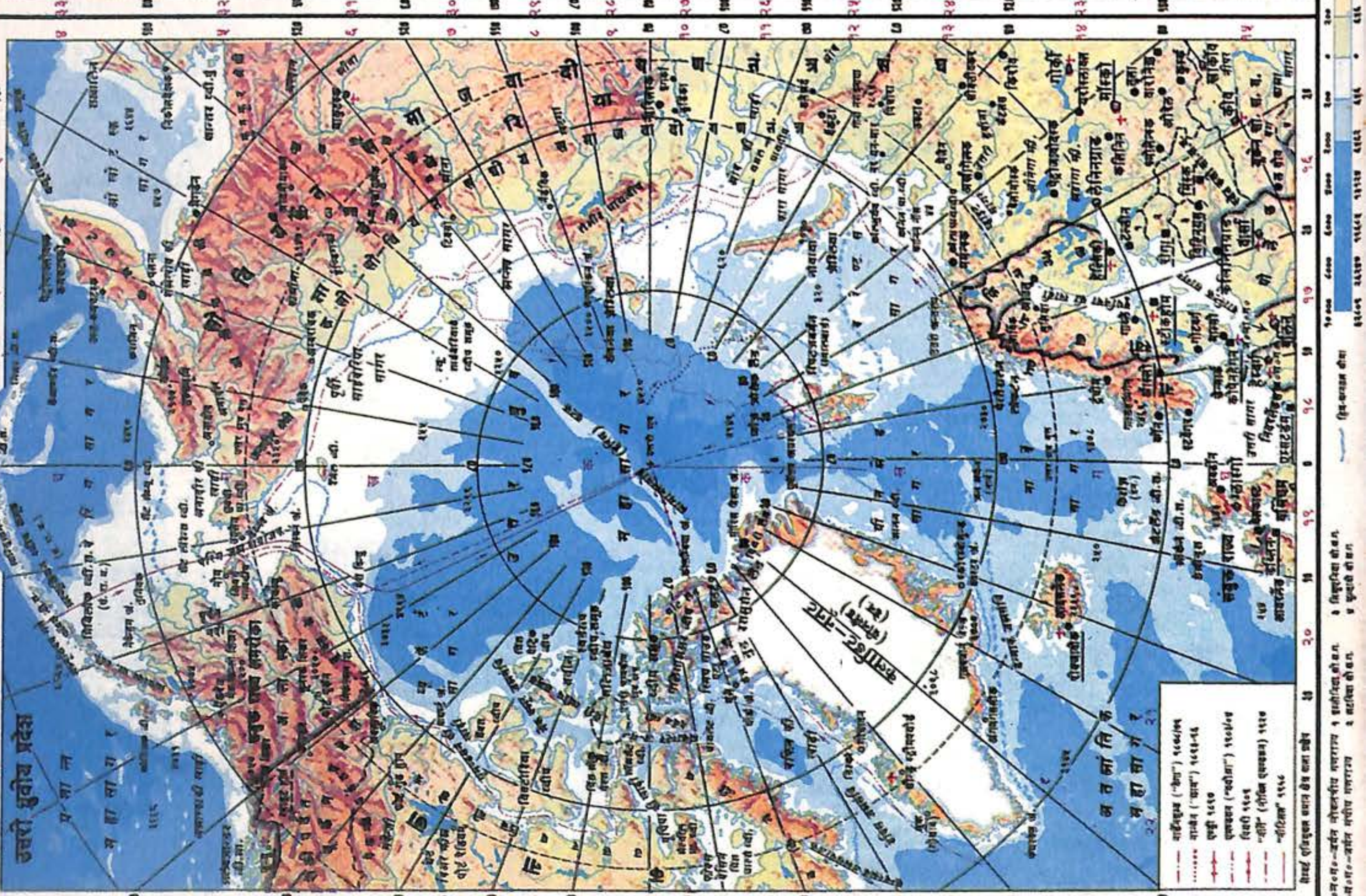

रेक्स डी रोजारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा भंडारी ऑफसेट प्रिंटर्स, भोपाल से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-1/208, अरेरा कॉलोनी, भोपाल-462 016 से प्रकाशित।
संपादक : विनोद रायना।